भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 08 | उदयपुर रविवार 01 मई 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोकसांस्कृतिक उन्नयन में डॉ. भानावत का नाट्यजनित योगदान

- डॉ. रामचरण महेन्द्र -

लोकधर्मी कला-संस्कृति के अध्ययन, अनुसंधान और सर्वेक्षण की सृजन-साधना में समर्पित डॉ. महेन्द्र भानावत अकेले ऐसे विद्वान हैं जो अपनेआप में एक संस्था हैं। डॉ. भानावत का पूरा जीवन और शोध भारतीय लोककलाओं द्वारा भारतीय संस्कृति के नव जागरण के क्षेत्र में समर्पित रहा है।

उनके अथक परिश्रम, प्रगाढ़ प्रेम और लगन के कारण ही लोकसंस्कृति की हलचल भारत में ही नहीं, अपितु विश्व के कई देशों में देखी जा सकती है। उन्होंने राजस्थान के आदिवासियों की जीवनधर्मी संस्कृति का अध्ययन कर जो निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं उनसे अनुसंधान के कई स्त्रोत खुले हैं। उनके अनेक नाटक, लेख आदिवासी जनजीवन को उजागर करते हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत अकेले ऐसे विद्वान हैं जो अपनेआप में एक संस्था हैं। डॉ. भानावत का पूरा जीवन और शोध भारतीय लोककलाओं द्वारा भारतीय संस्कृति के नव जागरण के क्षेत्र में समर्पित रहा है। उनके अथक परिश्रम, प्रगाढ़ प्रेम और लगन के कारण ही लोकसंस्कृति की हलचल भारत में ही नहीं, अपितु विश्व के कई देशों में देखी जा सकती है। उन्होंने राजस्थान के आदिवासियों की जीवनधर्मी संस्कृति का अध्ययन कर जो निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं उनसे अनुसंधान के कई स्त्रोत खुले हैं।
डॉ. भानावत ने अनेक घटनाएं, नन्हें-नन्हें प्रसंगों से जुड़ी हुईं सुनीं और उन्हें आज की दृष्टि से अत्यन्त मूल्यवान तथा उपयोगी मानते उनका सम्पादन-प्रकाशन करते इतिहास को लुप्त होते संरक्षित भी किया है जिसका समय आने पर और अधिक महत्त्व स्वीकारा जाएगा तब वैसा व्यतीत समाज उस काल में जी रही पीढ़ी को अविश्वसनीय भी लगने लगेगा।

डॉ. भानावत लिखित जो हिन्दी-राजस्थानी कठपुतली एवं अन्य लघु नाटक मेरे देखने में आये उनमें आधुनिक सभ्य जीवन, विशेषत: बाबू वर्ग, सभ्य समाज, वर्तमान औपचारिकता, पर्यावरण के प्रति सजगता, आधुनिक सभ्यता की निर्बलताओं तथा हमारी संस्कृति पर दूषित प्रभावों को व्यंग्यमय भाषा में चित्रित किया है। नाटककार वर्तमान समय में मध्यमवर्ग के जीवन एवं राष्ट्र को कमजोर बनाने वाली दूषित प्रथाओं पर करारी चोट करता है। आधुनिक औपचारिकता तथा दफ्तरों में होने वाली धांधली को अपनी लेखनी का शिकार बनाता है। लेखक की मान्यताओं में भारतीय एकता, सह अस्तित्व की भावना, समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना, सामुदायिक सद्भाव, भोगोपभोग की सीमा का क्षेत्र मुख है।

डॉ. भानावत के नाटकों का निष्कर्ष है कि भारतीय लोकतंत्र सही मायने में लोकतंत्र बने और समाज के नागरिकों में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बनी रहे। उन्हें नैतिकता और राष्ट्रीय हित में विश्वास है। उन्होंने समाज के सभ्य वर्ग को सर्तक किया है कि वह अपनी गतिविधियों में सुधार लावे और समाज के नैतिक और मानवीय मूल्यों को अब और अधिक नीचे न जाने दे।

लेखक ने दिखाया है कि अनेक स्थानों पर हम राजनीति को झगड़ों की जड़ मानते हैं किन्तु धार्मिक मतभेद और सामाजिक रूढ़ियां, दिखावा, औपचारिकता अधिक झगड़ों को जन्म देती है। हम स्वयं अपने वैयक्तिक, नागरिक, सामाजिक और दफ्तरों के जीवन का निरीक्षण करें और सांस्कृतिक जीवन के कंटकों को दूर करें। ग्रामों में साक्षरता का अधिकाधिक प्रचार करें और सम्पूर्ण भारत की नैतिकता के स्तर को ऊंचा उठावें।

'उदयपुर के आदिवासी' पुस्तक में डॉ. भानावत ने भीली संस्कृति का विशद अध्ययन प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि भीलों की संस्कृति में शैव सम्प्रदाय के संस्कार हैं। उनके जीवन और समाज पर शाक सम्पद्राय का प्रभाव है। लेखक ने लिखा है, ''आदिवासी समुदाय में शिव और शक्ति की विशेष मान्यता है।

शिवजी को जब सृष्टि निर्माण की इच्छा हुई तो उन्होंने शक्ति का सहारा लिया था। शिव सर्वशक्तिमान होते हुए भी शक्ति के बिना अधूरे हैं। भील सम्प्रदाय वाले शिव को सृष्टि का आदिकर्त्ता मानते हैं। यों इस सम्प्रदाय में 33 करोड़ देवी-देवताओं की मान्यता है।

महादेव अर्थात् शिव जिन्हें भील 'भोला शंभू' भी कहते हैं, सबका कर्त्ता, भर्त्ता और हर्त्ता मानते हैं। आदिवासियों की प्रत्येक बस्ती में शिवजी का चबूतरा, चौरा और पंचयातन मिल जायगी जो शैव संस्कृति में रंगे होने को सार्थक करती है।

अपने प्रत्येक अनुष्ठान तथा अन्य अवसरों पर वे शिव का स्मरण नहीं भूलते। महादेव को श्मशानवासी, दिगम्बर और भयंकर मानते हुए भी भीलों द्वारा उनकी भक्ति अनादिकाल से चली आ रही है। भीलों के भोला शंभू भांग, गांजे तथा आकधतूरे से ही प्रसन्न हो जाते हैं। बिना स्नान ध्यान किये ही वे लोग उनकी पूजा करते हैं। भीलों का गवरी नृत्य शिव की प्रसन्नता के लिए किया जाने वाला प्रमुख अनुष्ठान है। वन-संस्कृति प्रधान उदयपुर संभाग में सर्वाधिक प्राकृतिक सुषमा उपलब्ध है। ऐसे स्थानों पर शिव मन्दिर बहुतायत से मिल जायेंगे तथा आसपास भीलों के कबीले बसे हुए मिलेंगे।''

डॉ. महेन्द्र भानावत को देवीलाल सामर के पश्चात कठपुतली नाटकों को लोकप्रिय, उद्देश्यपूर्ण एवं जन-समाज में रूचि-परिष्कार करने के क्षेत्र में सर्वाधिक सफलता मिली है। यह कहना युक्ति संगत है कि उन्होंने ही कठपुतली नाटकों को साहित्यिक गरिमा प्रदान की है। इन नाटकों का मूल स्वर सांस्कृतिक उत्थान है। ये जिस भाषा शैली में लिखे और मंच पर उतारे गये हैं, वह लोकप्रियता पहले किसी भी नाटककार को प्राप्त नहीं हुई थी। उनके 'आजादी का उजास' का सर्वाधिक मंचन हुआ। कलाकारों का एक दल तैयार कर उन्होंने ग्राम-ग्राम इसके प्रदर्शन कराये। राजस्थान के विकास विभाग की ओर से उन्होंने भारतीय लोककला मण्डल के माध्यम से यह प्रशंसनीय लोकजागरण का कार्य किया।

'मंगलम् महावीरम्' और 'परभु पालणिये' भगवान महावीर के जन्म, सिद्धान्त तथा लोकसंस्कृति के उन्नयन में उनके योगदान का चित्रण करते हैं। 'राजा राज करे' नाटक 'अंधेर नगरी चौपट राजा' की पद्धति पर एक लोककथा को आधार बनाकर लिखा गया व्यंग्यात्मक नाटक है। 'ट्यूशन मास्टर' नाटिका में आधुनिक व्यापारिक दृष्टिकोण से चलने वाली बालशिक्षा और ट्यूशन दिलाने की आधुनिक शिक्षण पद्धति पर व्यंग्यात्मक प्रहार है।

'साब का टोकर' में आज के अधिकारियों की झूठी खुशामद, जी-हजूरी एवं मुंहलगे नौकरों का पर्दाफाश है। 'सरवर मियां! जी सरकार' में कला और सांस्कृतिक संस्थाओं की निर्बलताओं पर करारा व्यंग्य देखा जाता है। उदाहरणार्थ एक सांस्कृतिक संस्थान का दृश्य उपस्थित किया गया है। हास्य-व्यंग्यमय शैली में मदारी गधे को इस गीत पर नचाता है-

चाल भई चाल आणंदीलाल।
ठनठनपाल मदन गोपाल।।
सबने करदे मालोमाल।
कुण बंदूकां किणरी ढाल।।
कुणजी खींचे किण री खाल।
जानवर चले जन री चाल।।

सरवरिया - जन कुण?
मदारी - म्हारो गधो।
सरवरिया - अर जानवर?
मदारी - जानवर छोटो साब।
सर- छोटे सब रो कई निसाण?

मदारी - छोटी कुड़सी, छोटो दसकत, मोटी फाइल, मोटो चस्मो।

नाचै और गावै - यो छोटो है पण खोटो है। इनसे पूछो कई टोटो है।

बोलबा चालबा में घणो फास्ट।

'साक्षर डोबो' में देश की प्रतिष्ठा, रूढ़िवादिता, मूढ़ता को दूर करने के लिए साक्षरता को नितान्त आवश्यक माना है। इस नाटक को अत्यन्त लोकप्रियता मिली है और सम्पूर्ण साक्षरता का वातावरण बनाने हेतु सामाजिकों में इसकी बड़ी उपादेयता सिद्ध हुई है।

इनके अतिरिक्त गलकी का श्राप, अनोखा कुंवर, जड़ेली का कमाल, सवा हाथ का गंगाराम, रावल और रूठे दम्पत्ति, महाराणा की फतह, पानी पर पैदल यात्रा, लाख के मनके, यति का चमत्कार, डेली मासी री डीकरी जैसी छोटी-छोटी और भी अनेक कथाएं डॉ. भानावत ने लोक में प्रचलित सामान्य लोगों से सुनकर लिखी हैं जो कई तरह के सन्देश देती हैं।

हास्य और व्यंग्य के माध्यम से गुदगुदाती हैं तथा सत्य जीवन जगत की तह तक पहुंचाती हैं। सचमुच में ये घटनाएं मेवाड़ क्षेत्र में, सामंतीकाल में प्रचलित रही हैं। साधारणजनों में इनका प्रचार-प्रसार होने से और फिर राजघरानों, ठिकानों से इनका सम्बन्ध होते हुए भी ये महत्त्वपूर्ण नहीं समझी गईं इसलिए ये कहीं भी किसी हकीकत की बही में इन्द्राज नहीं की गईं।

डॉ. भानावत ने ऐसी अनेक और भी घटनाएं, नन्हें-नन्हें प्रसंगों से जुड़ी हुईं सुनीं और उन्हें आज की दृष्टि से अत्यन्त मूल्यवान तथा उपयोगी मानते उनका सम्पादन-प्रकाशन करते इतिहास को लुप्त होते संरक्षित भी किया है जिसका समय आने पर और अधिक महत्त्व स्वीकारा जाएगा तब वैसा व्यतीत समाज उस काल में जी रही पीढ़ी को अविश्वसनीय भी लगने लगेगा।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है। अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये
सदस्यता शुल्क :	
संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।
shabdranjanudr@gmail.com

पोथीखाना

संघर्षों के गुलाब में खिलते डॉ. दिनेश

डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' का सर्वतो सुहाना पक्ष यह है कि वे उम्र के इस पड़ाव (93) में भी साहित्य की सभी विधाओं में रचनाधर्मी हुए हमारे बीच संघर्षों के गुलाब बने महक रहे हैं।

हिन्दी साहित्य का इतिहास टटोलें तो पता चल जाएगा कि प्रारम्भ में साहित्य के अनेक दिग्गजों ने शीलपट्टी पर अपनी जीवनरेखा को रगड़ते अपना नाम शीलोत्कीर्ण किया है। डॉ. दिनेश भी उन्हीं में से एक हैं। डॉ. दिनेश लिखते हैं-

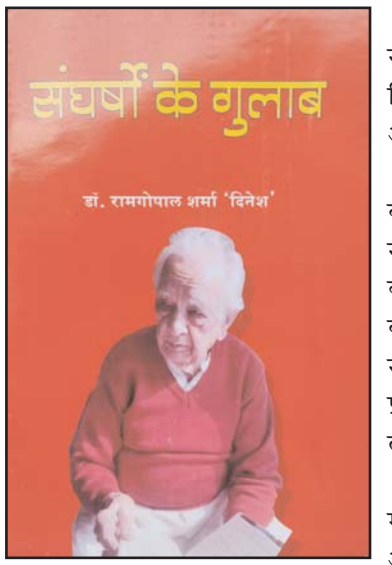

''चन्द मिनटों के निराला दर्शन ने मुझे झकझोर कर रख दिया। मैं सोचने लगा- क्या दु:ख के पहाड़ के नीचे आ जाना पागल हो जाना है? क्यों आदमी को जमीन और आसमान एक साथ हर जगह जुड़े हुए नजर आने लगते हैं? क्यों वह याद आता है जिसके बिना न धरती रह पाती है, न आसमान? सबकुछ शून्य हो जाता है, लेकिन इसी शून्यता के बीच कहीं बह रही होती है वह सरस्वती जो सुख से नहीं, दु:ख से निसृत होती है।'' - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' से एक विशेष भेंट, पृष्ठ 46

पुस्तक के प्रारम्भ में 'समर्पण' में डॉ. दिनेश के कवि-मन की ये पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-

घर-बाहर के संघर्षों में, ईश्वर ने मुझको जन्म दिया।
जो कुछ पुश्तैनी साधन थे, उनको शासन ने छीन लिया।।
जिस ओर कदम रखता था मैं, कांटे-ही-कांटे मिलते थे। उत्साह बहुत
कुछ था जिससे, मन में गुलाब भी खिलते थे।।

और उसके बाद भूमिका-पृष्ठ में अपनी आत्मकथा लेखन के बारे में स्पष्ट करते हैं- ''सही अर्थों में किसी भी लेखक की आत्मकथा अपने समय का विभिन्न रूपों में एक प्रामाणिक इतिहास बन जाती है। मैंने जो कुछ देखा और भोगा है, उसे संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। जो कुछ लिख रहा हूं, वह मेरे निजी अनुभवों तक सीमित न रहे, बल्कि पाठक की अपनी व्यथा-कथा तथा उल्लासों की सीमाओं का भी स्पर्श करे। शैली की दृष्टि से इसमें संस्मरण, जीवनी आदि का भी समाहार हुआ है। भाषा की सरलता पर भी मेरा विशेष ध्यान रहा है।''

यह पुस्तक कुल 41 अध्यायों में विभक्त है। इसमें चार अध्याय (16 से 19) उदयपुर प्रवास की स्मृतियों के हैं। बानगी के तौर पर -

(1) मुझे सन् 1960 में राजस्थान साहित्य अकादमी का प्रथम काव्य-पुरस्कार अकादमी के अध्यक्ष पं. जनार्दनराय नागर से मिला। उन्होंने यह कह चमत्कृत कर दिया कि यह पुरस्कार 'मधुजनी' की श्रेष्ठता के आगे छोटा है। नागर साहब 'जनुभाई' नाम से अपनी शालीनता के लिए विख्यात थे। उन्होंने मुझे अकादमी की कार्यकारिणी का सदस्य बनाया। मैं ग्यारह वर्षों तक सदस्य रहा।

(2) स्मृतियों की उम्र बहुत बड़ी होती है। मनुष्य के हृदय की गहराई में छिपकर वे उसके संवेदनों का अंग बनकर सोती रह अचानक कोई झटका लगते ही आखों के सामने आ जाती हैं। (पृ. 72)

(3) उदयपुर विश्वविद्यालय में रहते उन्होंने लिखा- मेरे पिताजी बहुत साहसी, परिश्रमी और कर्मठ व्यक्ति थे। उन्होंने अजमेर से चलते मुझे समझाया, तुमको उदयपुर में भी मेरे बिना सपरिवार रहना होगा। मैं गांव की बची जमीन, घर और बाह का मकान किसी अन्य व्यक्ति के भरोसे नहीं छोड़ सकता।

डॉ. देवराज उपाध्याय ने विभागाध्यक्ष का पद संभाल लिया था। वे बधिर थे इसलिए मेरे प्रति विभागीय प्राध्यापकों के व्यवहार को नहीं समझ पाये और वातावरण खराब हो गया।

मैंने महेन्द्र भानावत को अपना प्रथम शोधार्थी बनाते पीएच.डी. के लिए पंजीकृत कराया। वे स्थानीय भारतीय लोककला मण्डल में विशेष पद पर कार्यरत थे इसलिए विभागीय साथियों की मेरे प्रति व्यवहार में दूरी बढ़ती गई। महेन्द्र भानावत को मेरे साथी प्राध्यापकों ने भड़काने का कार्य किया किन्तु वे प्रभावित नहीं हुए। उन्हें 'मेवाड़ का गवरी लोकनाट्य' पर पीएच.डी. की उपाधि मिली।

प्रकाश 'आतुर' के तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया से घरेलू सम्बन्ध थे। वे मुंहफट और हंसमुख व्यक्ति थे। एकदिन मेरे निवास पर आकर पैर छूते हुए बोले- 'आप ब्राह्मण हैं। उम्र में भी मुझसे बड़े हैं। मेरी गलतियों के लिए मुझे क्षमा करके अपना पीएच.डी. का शिष्य बना लीजिये।' मैंने उन्हें गले लगाया और दूसरे ही दिन एक विषय की रूपरेखा बनवाकर पंजीकृत करा दिया। उन्होंने परिश्रमपूर्वक शोधकार्य कर उपाधि प्राप्त की। (पृ. 75-76)

(4) रीडर पद के साक्षात्कार के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष ने जानबूझकर ऐसा प्रश्न पूछा जो गलत था। मैं समझ गया कि ये मेरा चयन नहीं होने देंगे अत: मैंने भी कह दिया, 'आप गलत प्रश्न पूछ रहे हैं। जिस पुस्तक की चर्चा कर रहे हैं वह कॉलेज पुस्तकालय में है, आप उसे मंगवाकर अपनी भूल का संशोधन कर सकते हैं। कुलपति सत्यप्रसन्नसिंह भण्डारी को प्रोफेसर साहब का प्रश्न पूछने का ढंग अच्छा नहीं लगा। पुस्तकालय से वह पुस्तक लाने को कहा गया तो प्रोफेसर साहब कुछ परेशान हुए। दूसरे विशेषज्ञ पूना विश्वविद्यालय के डॉ. भागीरथ मिश्र थे। उन्होंने भण्डारीजी से कहा कि डॉ. दिनेश का कथन सही है इसलिए पुस्तक मंगवाना व्यर्थ है। विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी ने रीडर पद पर मेरे नाम की स्वीकृति दे दी। (पृ. 79-80)

कुल जमा 200 पृष्ठों की इस पुस्तक में दो परिशिष्ट हैं। प्रथम में डॉ. दिनेश का रचना-संसार और उन्हें प्राप्त मान-सम्मान का लेखा है जबकि द्वितीय में पारिवारिक महत्त्व के चित्र हैं। अन्त में डॉ. दिनेश के जीवनकर्म का संक्षिप्त प्रोफाइल है।

पुनीत प्रकाशन, ए-3, कान्तिनगर, जयपुर-6 से प्रकाशित चार सौ रूपये मूल्य की यह संस्मरणात्मक जीवनी साहित्य के इतिहास में एक नवीन दृष्टि का सूत्रपात करने वाली रसभीनी उत्कृष्ट कृति है। **- म. भा.**

होली के रंग मामा भांजा के संग

होली का उत्सव देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न तरीके से मनाया जाता है। रंगों का उत्सव होने के कारण विविध प्रकार के रंगों से सभी जन आपस में एक-दूसरे को रंग छांटकर प्रेम, सौहार्द, भाईचारा के रंग प्रकट करते हैं। साहित्यकर्मी अपने-अपने ढंग से अपने मित्रों को विविध उपाधियां देकर मनबहलाव करते हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाएं होली पर विशेष अंक प्रकाशित करती हैं। कहीं-कहीं इस मौके पर विशिष्ट स्मारिकाओं का प्रकाशन भी देखने को मिलता है।

इसी क्रम में पिछले 38 वर्ष से छत्तीसगढ़ के मुंगेली से प्रेम आर्य के प्रधान सम्पादकत्व में प्रतिवर्ष होली पर 'मामा भांजा टाइम्स' नाम से स्मारिका का प्रकाशन उल्लेखनीय है। इसमें होली सम्बन्धी कुछ लेख, कविताएं और अश्विनीकुमार आलोक द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत से लिया साक्षात्कार भी छपा है जिसका शीर्षक है- आदिवासियों से छीन ली गईं सांस्कृतिक चेतनाएं।

लेकिन प्रधानत: होली के रंगों के छींटे मुंगेली के प्रतिष्ठित डाक्टरों, नगरपालिका परिषद के सदस्यों, इष्ट मित्रों, पत्रकारों, वार्ड सदस्यों, अधिकारियों, वकीलों तथा नेताओं को लगाये हैं। उन्हें बड़ी ही रंगदार, चुटीली, व्यंग्यमय, हंसी-ठिठोली से सनी उपाधियां देकर जनरंजन बांटा है। अंक सर्वप्रकारेण पठनीय तथा मनोरंजन से भरपूर है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

सकारात्मक विचारों का जुड़ाव लिए पुरुषार्थ का दीप

- डॉ. कल्पना जैन -

पुरुषार्थ का दीप डॉ. दिलीप धींग की अभिवनव कृति है। इसमें उनके छोटे -बड़े 64 निबन्ध संकिलित हैं।

अधिकांश निबन्ध सकारात्मक सोद्देश्य प्रयत्नों से सम्बन्धित हैं, अत: पुरुषार्थ को आलोकित करने वाले हैं। डॉ. दिलीप धींग कहते हैं कि पुरुषार्थ आत्मनिर्भरता का प्रधान सूत्र है। पुरुषार्थ के क्षितिज पर ही सिद्धि का सूरज उगता है। जो पुरुषार्थ नहीं करता उसका भाग्य भी सो जाता है। -पृ. 26

पुरुषार्थ के दीप पुस्तक में आगम ग्रन्थों का परिचय भी दिया गया है और उनका स्वाध्याय करने की भी प्रेरणा दी गई है। डॉ. धींग के अनुसार आगमों के स्वाध्याय में राग-त्याग की प्रबल प्रेरणा मिलती है।

पुस्तक में जैन परम्परा के विभिन्न नियमों और साधना आदि सम्बन्धी निबन्ध भी हैं। श्रावकाचार के अणुव्रतों, णमोकार मन्त्र, तप, आयंबिल ओली, सल्लेखना, संथारा आदि का विवेचन है। नारी की, मां की महिमा, के अतिरिक्त कतिपय आधुनिक प्रासंगिक विषय शिक्षा एवं मूल्य आदि भी इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ाते हैं।

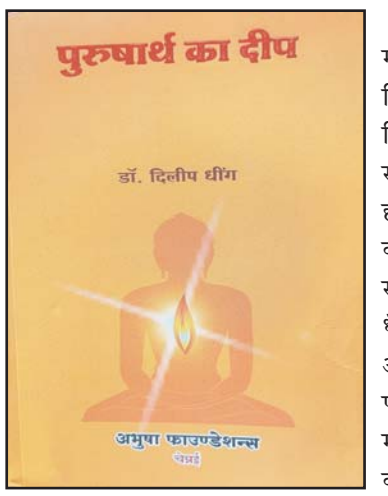

डॉ. धींग की दृष्टि में नवपद का नवकार मंत्र मंगलकारी तथा विघ्नविनाशक है। वास्तव में णमोकार मंत्र की महिमा अपार है। यह मंत्र सब कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। केवल इसके स्मरण से आधि, व्याधि एवं उपाधि नष्ट हो जाती है। अपवित्र को पवित्र, पापी को पापमुक्त, रोगी को निरोगी एवं स्वस्थ तथा दु:खी मानव को सुखी करने में मंत्र महा उपकारी है। संथारा जैन धर्म की आगमसम्मत प्राचीन तप आराधना है। जैनाचार्यों ने मरण को एक महोत्सव के रूप में स्वीकार किया है। जीवन को साधने के साथ मरण को साधने का भी प्रयत्न किया है। इस तरह के मरण को समाधि-मरण या संल्लेखना कहा गया है।

एक आलेख में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य चारित्र-निर्माण कहा गया है। चारित्र निर्माण से व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण व देश निर्माण होता है। चरित्र का अर्थ है- कर्त्तव्य निष्ठा, दूसरे के प्रति सद्व्यवहार, अहिंसा, सत्य, धैर्य, क्षमा, सरलता, नम्रता अवंचकता, अचौर्य, ब्रम्हचर्य, परोपकार सेवा, दान आदि मानवीय मूल्यों को प्राप्त करना। श्रुत की आराधना से जीव अज्ञान का क्षय करता है और संक्लेश को प्राप्त नहीं होता है। जिस प्रकार धागे से युक्त सुई गिर जाने पर भी विनष्ट नहीं होती है अर्थात् खोजी जा सकती है, उसी प्रकार श्रुत सम्पन्न जीव संसार में विनष्ट नहीं होता। डॉ. धींग ने पुस्तक में प्राकृत-अपभ्रंश के अनेक ग्रन्थों का परिचय देते इनके अध्ययन के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला है। जैनधर्म ने ही सबसे पहले पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पतियों को जीव कहा।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अथवा लोक-रचना जीवतत्व से ओत-प्रोत है। सम्पूर्ण लोक जीवन्त है। जितनी कम से कम जरूरत हो उसी के मुताबिक खनिज, हवा, पानी, उर्जा, वनस्पतियां, त्रस जीवों के शरीर और उनकी सेवाएं उपभोग में ली जानी चाहिए। जैनधर्म की अनमोल विरासत नामक आलेख में अनेकान्त, शाकाहार, व्यसन मुक्ति आदि की विशेष व्याख्या की है।

पुस्तक पुरुषार्थ के दीप में संकलित सभी निबन्धों का स्वर यही है कि जैन धर्म और प्राकृत-अपभ्रंश के साहित्य के अध्ययन को वर्तमान की सभी प्रवृत्तियों से जोड़ कर रखा जाय तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की लोक संस्कृति को जीवन्त रखा जा सकता है।

स्मृतियों के शिखर (142) : डॉ. महेन्द्र भानावत

गोपीचन्द भरथरी गाथा का सिंहनाद करनेवाले सिंहलजी

श्री ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल संतों, भक्तों तथा उनके विशिष्ट अनुगामियों पर खोज की पगडंडियां लिए पिछले छह दशकों से शोधरत शीर्ष साधक बने हुए हैं। इसके लिए उन्होंने अनेक स्थानों का भ्रमण कर अनेक शास्त्र भण्डारों में संगृहीत हस्तलिखित ग्रंथों, गुटकों, टप्पों, रूक्कों, पट्टों-परवानों, ताम्रपत्रों का अध्ययन पलेवण कर अनेक अज्ञात-अल्पज्ञात संतों, भक्तों का विवेचन, अध्ययन एवं विश्लेषण कर शिलालेखीय कार्य किया है।

सैकड़ों धूल खाते, गंदलाते, दीमक द्वारा हजम करते टूटे-बिखरे पन्नों, पत्रों तथा पानड़ों को संवारकर उन्होंने संरक्षित किया है। उनके द्वारा लिखित एवं सम्पादित विविध ग्रंथ तथा पत्र-पत्रिकाएं इसकी साक्षी हैं। यह कार्य करते वे अभी भी अविराम अथक अभिराम बने हुए हैं।

सिंहलजी द्वारा सम्पादित 'गोपीचन्द्र भरथरी-वैराग्य बोध-गान' इसका ज्वलंत प्रमाण है। इससे सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि गोपीचन्द्र भरथरी गाथा को अनेक प्रांतों की विविध भाषा-वाणियों में संतों, भक्तों, विद्वानों तथा विशेषज्ञों ने विविध छंदों, अलंकारों तथा राग-रागनियों में रचनाकर गोपीचन्द्र भरथरी की ख्याति को अक्षुण्ण बनाये रखा है।

सच तो यह है कि गोपीचन्द्र भरथरी को सर्वाधिक ख्याति और सर्वाधिक लोकप्रियता लोक ने दी है। यह लोक जिसका व्यतीत विराम नहीं हुआ है। जो अतीत होते हुए वर्तमान में जीता हुआ भावी को खटखटाता दस्तक देता लगता है। जो परम्पराशील होकर संस्कारवत अधुनातनजीवी बनाठना दृष्टिगोचर होता है। लोक द्वारा समूहबद्ध विविध गीतों, गाथाओं तथा गायकियों द्वारा विविध वाद्यों की संगत पर अनेक रूपा प्रस्तुतियों द्वारा यह आख्यान अपनी लोकप्रियता के चरम पर है।

लोक का आलोक नैसर्गिक होता है। वह कभी धूमिल नहीं पड़ता। उसकी बोली का संसार बड़ा सुहाना, सुखद एवं आत्मीय होता है। सबके कण्ठों पर आसीन, कण्ठासीन बना रह वह ठेठूंठेठ अतल-पतल तक अपनी परिव्याप्ति देता असल, अखण्ड बना रहता है।

डॉ. श्रीराम परिहार के शब्दों में, 'बोली का गहरा सम्बन्ध अपने भूगोल-खगोल से रहता है जिसका अपना समृद्ध और संस्कारित लोकसाहित्य होता है। यह साहित्य सच्चा तो है ही, समदृष्टा और सर्वशुभ भी है। इसके संसार की प्रत्येक वस्तु जीवित सत्ता लिए होती है। इसमें धरती भोजन परोसती है। गगन छाया करता है।

पवन पंखा झलता है। जल शुद्ध कर तृप्त करता है। आग गति और ऊर्जा देती है। पावस झूमता है। शरद स्वच्छ चांदनी की चूनर ओढ़ती है। हेमंत की सांझ खिलती है। शिशिर सी-सी कर ठिठुरता है। बसंत होली की धमाल मचाता है। ग्रीष्म तपता है। हेमंत संदेशा ले जाता है। नदियां गाती हैं। गोवत्स और सिंह के बीच संवाद होकर मामा-भांजे के सम्बन्ध हंसने लगते हैं।'

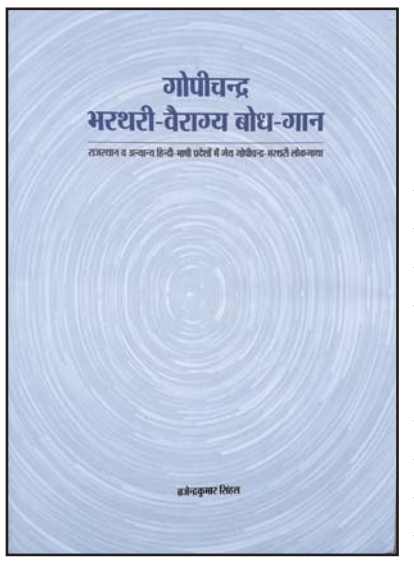

लोकमान्य इस गाथा में भरथरी मामा और गोपीचन्द्र भानजा है। मामा के ही सदृश वेश में भांजा गोपीचन्द्र गुप्त वेश धारण कर संसार में परिभ्रमण करता है। यही कारण है कि भारत के सभी उत्तरी अंचलों में गोपीचन्द्र का वृतांत परिव्याप्त है। प्रसिद्धि है कि माणचन्द्र गौड़ प्रदेश का राजा था। मैनावती नाम की उसकी रानी थी। उसके कोई संतान नहीं थी। गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रदत्त वरदान के फलस्वरूप उसके एक पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म हुआ। यह वरदान देते समय कह दिया गया कि उसे जो पुत्ररत्न प्राप्त होगा उसे बारह वर्ष की आयु में ही जोगी बनाना होगा अन्यथा वह जीवित नहीं बच पायेगा।

यह निर्विवाद है कि लोकनाट्य ख्यालों की दृष्टि से राजस्थान सर्वाधिक चर्चित तथा विविधरूपा प्रदर्शन-शैलियों के लिए दूर-सुदूर तक जाना पहचाना प्रांत है। नाट्यशास्त्र के गहन अध्येता चिरंजीत ने पूरे देश के विविध अंचलों का भ्रमण कर कहा, 'भरतमुनि नाम से कोई व्यक्ति नहीं, एक पूरा वर्ग था जो भरत नाम से ग्रामीणजनों का सशक्त मनोविनोद कर आजीविका चलाता था। इसका सर्वाधिक पड़ाव राजस्थान में रहा और उसी के फलस्वरूप आगे जाकर अनेक मण्डलियों ने प्रभावी प्रदर्शन शुरू किये जो विभिन्न शैलियों में आज भी देखने को मिलते हैं।'

उदयपुर में आयोजित सुखाड़िया विश्वविद्यालय की एक संगोष्ठी में चिरंजीतजी से लोकनाट्यों पर मेरी लम्बी गहन चर्चा हुई। वे मेरे निवास पर भी आये और मेरे द्वारा किये गये कार्य-संग्रह को बड़ी देर तक अवलोकित करते रहे। इसी क्रम में 'ड्रामा इन रूरल इण्डिया' लिखने वाले जगदीशचन्द्र माथुर को भी हमने भारतीय लोककला मण्डल की संगोष्ठी में आमंत्रित कर जहां उनके अनुभवों का सभी ने लाभ लिया वहीं बड़ी देर तक राजस्थान में किये गये मेरे कार्य को ठीक से देख-सुन अपने ढंग की सामग्री संगृहीत करते कहा कि एक और पुस्तक लोकनाट्यों पर लिखने का मन है लेकिन वे यह कार्य नहीं कर पाये।

जन-जन के कण्ठों पर आश्रित मौखिक अथवा वाचिक साहित्य दिखावे से दूर सहज जीवन जीनेवाले सहयात्रियों के समष्टिगत धर्म-कर्म तथा अध्यात्म-अनुष्ठान की लोकमानसीय प्रज्ञा-प्रतिभा का महत्वपूर्ण कारक होता है। उसमें प्रचलित गीत-नृत्य, कथा-वार्ता, गाथा-प्रहसन, शिल्प-चितरावण लोकरंजक लोकमान्य रचना होती है। रचनाकार-व्यक्ति गौण होते, समूह प्रधान व्यक्ति होते कभी-कभी नाम-छाप देकर प्रतीक और मिथक बन जाते हैं। हस्तलिखित गुटकों तथा छपित पोथियों में ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं।

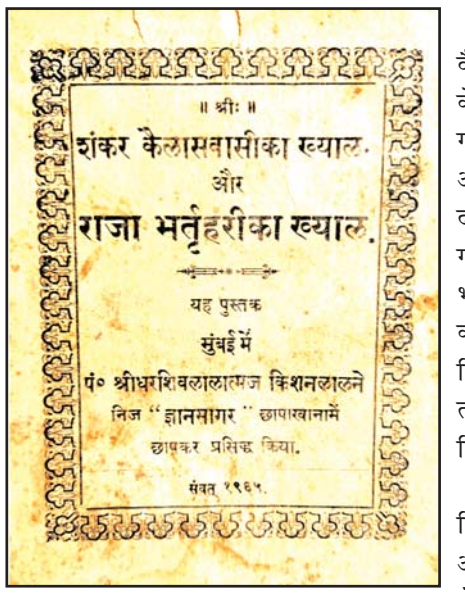
॥ श्रीः ॥
शंकर कैलासवासीका ख्याल
और
राजा भर्तृहरीका ख्याल.
यह पुस्तक
मुंबईमें
पं० श्रीधरशिवलालात्मज किशनलालने
निज "ज्ञानसागर" छापाखानामें
छापकर प्रसिद्ध किया.
संवत् १९६५.

राजस्थान के प्रत्येक गांव में इन ख्याल-तमाशों के आयोजक, प्रदर्शक तथा दर्शक मिल जायेंगे। यहां कुछ ख्याल मण्डलियां तो ऐसी हैं जिन्होंने इस प्रांत के बाहर दूर-दूर तक जाकर अपनी रंगतों से ऐसा प्रभाव डाला कि उनके नाम-ठाम से विशिष्ट रंग-शैलियां ही चल पड़ीं। नत्थाराम, नानू दूलिया, लच्छीराम, चैनराम, उगमराज, गंगाराम, तेजकवि के ख्याल तथा हाथरसी, चिड़ावी, कुचामणी, मेवाड़ी, मारवाड़ी शैली, चाल अथवा रंगत के ख्याल प्रसिद्धि के चरम पर रहे।

धुर बचपन में मैंने भी अपने पास के छोटे से गांव के एक बालक को भरथरी गाते, भीख मांगते देखा था। अपने कंधे पर कोथला लटकाये वह घर-घर फेरी लगाता आटा मांग रहा था। उसके कण्ठ में जैसे मिश्री घुली हुई थी। बड़ी ही करूणा भरी लयकारी में वह गा रहा था जिसका प्रमुख कड़ावा था-

'भिक्षा दे दे रानी पिंगला, जोगी खड़ा है
दुवार
रा जा भ र थ री--------'

मां ने कहा था, 'यह छोकरा पास के गामड़े का अड़भोपा है। इसे दो मुट्ठी आटा घाल आ।' उसकी वह आवाज आज भी मुझे शकुन देती लगती है। वैसी गायकी बाद में किसी से मुझे सुनने को नहीं मिली।

भारतीय लोककला मण्डल द्वारा आयोजित लोकानुंरजन मेलों में हमने ख्याल मण्डलियों के जो दल आमंत्रित किये उससे उन्हें विशिष्ट सम्मान, पुरस्कार तथा व्यापक प्रतिष्ठा मिली। कठपुतली खेल द्वारा तो कलामण्डल को 1965 में रूमानिया के अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में विश्व का सर्वोच्च कीर्तिमान प्राप्त हुआ जिससे राजस्थान की अंतिम स्वांस लेती पारंपरिक कठपुतली कला को पुनर्जीवन का जैसे वरदान ही मिल गया। यह खेल नागौर के राजा अमरसिंह राठौड़ तथा मुगल बादशाह शाहजहां से संबंधित 'मुगल दरबार' के नाम से मंचित किया गया था।

ऐसे अनेक चरित्र और आख्यान लोकजीवन की धरोहर बने हुए हैं जिनके जीवनचरित की प्रमुख घटनाओं का प्रदर्शन होता है। उनमें गोपीचन्द्र भरथरी सर्वथा अलग है।

चित्तौड़ के पास बसी गांव के खैरादी-सुथार परिवारों द्वारा निर्मित विविध काष्ठशिल्प हमारी पारंपरिक संस्कृति, समाज तथा धार्मिक उत्सव आयोजनों के लिए पूरे विश्व में ख्याति लिये हैं। इनमें से कावड़ एक चल-मन्दिर के रूप में लोकख्यात देवी-देवताओं तथा संतों-भक्तों-संन्यासियों के चित्र-दरसाव-दर्शन के लिए गांव-गांव घर-घर पहुंच लोगों को पुण्यफल की प्राप्ति कराती है। कावड़ फिराने वाला कावड़िया भाट के नाम से जाना जाता है जो प्रत्येक चित्र पर मोरपंख की छुवन देकर सम्बन्धित चित्र की बड़ी सुमधुर वाणी में लयात्मक गानकर जीविकार्थ धानचून आदि प्राप्त करता है।

सन् 1962 में पहलीबार मैं बसी के चितेरों के सम्पर्क में आया और उनके द्वारा निर्मित गणगौर, ईसर, वेवाण, खांडों, कठपुतलियों, कावड़ों, मुखौटों, गंजफा टिकटियों आदि पर खूब लिखा। यहां के मांगीलाल मिस्त्री को तो कलामण्डल में ही बुला लिया। यहां रह मिस्त्री द्वारा मुख्यत: कावड़कला में अनेक नये प्रयोग करवाये गये। मैंने भी कावड़ को लेकर अनेक कार्यशालाएं, संगोष्ठियां तथा शिल्प-शिविर आयोजित किये। देश में ही नहीं, विदेश के अनेक संग्रहालयों में भी मांगीलाल मिस्त्री द्वारा निर्मित कावड़ें पहुंचीं। अब तो कावड़ें मात्र सज्जा और प्रदर्शन की वस्तु बनी हुई हैं।

इन कावड़ों में धन्ना जाट, कूबा कुम्हार, गणिका वैश्या, राजा हरिश्चंद्र, मोरधज राजा, रामायण, महाभारत के मुख्य प्रसंग सहित अनेक चित्रों के दरसाव के साथ गोपीचन्द्र भरथरी तथा रानी पिंगला के चित्रफलक अपनी अहमियत रखते हैं। कावड़िया इनके चित्रों के दरसाव के साथ लयकारी देते कहता है- 'ये देखो गोपीचंद अर राजा भरथरी। गोपीचन्द मामा अर भरथरी भानजा। गोपीचन्द उजैणी का राजा हुआ। गुरु गोरखनाथ का चेला हुआ। राजपाट छोड़ संन्यासी बना। अर ये राणी पिंगला से भिक्षा ग्रहण करता राजा भरथरी।' मिस्त्री ने तो चित्रों वाली एक पूरी कावड़ ही गोपीचन्द भरथरी की चित्रित कर दी।

गोपीचन्द भरथरी गाथा राग से विराग, वैभव से विभूति, विक्रम से विरल, प्रशांत से शांत, जम से जति, अटवी से अलख, घर से गोरख, गिर से गुफा, साम्राज्य से संत, राजपाट से रजठाठ, व्यथा से कथा, भोग से योग, अवन्त से रसवंत, हलाहल से हलरावण, समृद्धि से शून्य, उदय से अस्तोदय, पिंगला से पयस्वी, आनंद से आत्मानंद, सिद्ध से लोकसिद्ध तथा युग से युगयुगीन होने की गाथा है। कहां से हुआ इसका उद्भव और किन भव-भवों से होकर कहां जाकर इसका अविराम विराम होगा, क्या कभी कोई जान पायेगा और यदि जान पायेगा तो कभी कोई कुछ कह भी जायेगा?

बालकवि बैरागी ने यह ठीक ही कहा, 'संतों पर काम करना बहुत कठिन काम है कारण संतों के साथ उनके अनुयायी होते हैं, अनुगामी होते हैं और सबसे अधिक भक्त होते हैं। संत सच्चे अर्थों में विश्व-मानव होकर समूची मानवता के बारे में सोचते हैं। शुभ तथा सर्व मंगल उनका अभीष्ट होता है साथ ही वे मानव की मृत्यु को लेकर उसके उद्धार में बदलने का संकल्प लेकर समाज से बात करते हैं।'

मेरे निजी संग्रह में संरक्षित ख्याल-पुस्तकों में गोपीचन्द्र भरथरी से सम्बन्धित पांच ख्याल पुस्तकें हैं। उनमें सबसे पुरानी संवत् 1965 में ज्ञानसागर छापाखाना, बम्बई से छपी शंकर कैलासवासी का ख्याल और राजा भर्तृहरी का ख्याल है। उसमें भरथरी से संबंधित 8 रेखाचित्र तथा लेखक मोहनलाल की छाप मिलती है-

- शेष पृष्ठ सात पर

अरूण मिश्रा फिमी की सस्टेनेबल माइनिंग इनिशियेटिव कमेटी के चेयरमैन नियुक्त

उदयपुर (वि.)। भुवनेश्वर में आयोजित कार्यक्रम में हिन्दुस्तान जिंक के सीईओ और पूर्णकालिक निदेशक अरूण मिश्रा को सस्टेनेबल माइनिंग पहल के तहत् फिमी की सस्टेनेबल कमेटी का चेयरमैन नियुक्त किया गया है। मिश्रा वर्तमान में इंटरनेशनल जिंक एसोसिएशन के अध्यक्ष भी हैं। जिंक देश का सबसे बड़ा और दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सीसा-जस्ता उत्पादक होने के साथ ही पांच दशक से अधिक खनन और गेल्वेनाइजिंग के अनुभव में अग्रणी है।

अरूण मिश्रा ने कहा कि हमें धरती (कृषि) और जमीन (खनिज) के नीचे दोनों पर धरती माता द्वारा दिए गए संसाधनों को महत्त्व देना चाहिए। खनिज न केवल हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण है बल्कि देश के विकास के लिए भी अत्यावश्यक है। यह हमेशा से माना जाता रहा है कि भारत में खनिज संसाधनों की अधिकता है जो आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में महती भूमिका निभाएगा। फिमी की सस्टेनेबल माइनिंग इनिशिएटिव की गवर्निंग काउंसिल के अध्यक्ष के रूप में मेरी प्राथमिकता खदानों को सस्टेनेबल और नेट जीरो हेतु सक्षम करने के साथ खनिज संरक्षण होगी। मेरे प्रयास इस विकास यात्रा को समर्पित हैं और आगे भी रहेंगे।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 अप्रेल 2022

सम्पादकीय

शब्दों से अधिक चित्रों का महत्त्व

हमने संवाद और अभिव्यक्ति तथा अपने मनोभावों के प्रकटीकरण के लिए शब्दों को ही अहम मानते सर्वाधिक महत्त्व दिया परन्तु जब लिपि का आविष्कार ही नहीं हुआ तब शब्द-शक्ति तो थी नहीं फिर मनुष्य कैसे रहा होगा? इसके लिए अति प्राचीनता के मनुष्य को देखना होगा जिसने गुफाचित्रों अथवा शैलचित्रों के माध्यम से अपने मनोभाव का रंगों-रेखाओं के जरिये जो चित्रांकन किये वे आज भी मुंह बोलते उस काल के ऐतिहासिक समाज के सरोकारों की मनोरम अभिव्यक्ति लिए हैं।

इससे स्पष्ट है, शब्द-शक्ति से अधिक महत्त्व चित्र-शक्ति का रहा लेकिन गंभीरता से गौर करें तो वह समय अतीत-व्यतीत होकर नहीं गुजर गया बल्कि आज भी उसका वही महत्त्व बना हुआ है। इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों ने बड़ा शोध कार्य भी किया और निष्कर्ष दिया कि मात्र सात प्रतिशत शब्दों का इस्तेमाल ही हम अपने मौखिक संवाद के जरिये संवाद कर पाते हैं जबकि इससे पांच गुना अधिक 38 प्रतिशत व्यक्ति अपनी आवाज की टोन और उतार-चढ़ाव के जरिये करता है बल्कि खोज तो यहां तक कहती है कि सर्वाधिक रूप में व्यक्ति की देह-भाषा का इस्तेमाल होता है। इस देह-भाषा के जरिये व्यक्ति अपनी आंखों, हाथ के इशारों, चेहरे की मुद्राओं तथा अन्य शरीरांगों के जरिये अपने मनोभाव व्यक्त करता है।

दूर क्यों जायें, हम जो स्वप्न देखते हैं उनमें भी शब्द की बजाय चित्रात्मक दृश्य ही दिखाई देते हैं। अधिक गहन विचार करें तो छोटे-छोटे बच्चे भी चित्र-दृश्य ही अधिक पसन्द करते हैं। प्रारम्भिक पढ़ाई में भी बालक को अक्षर-ज्ञान उससे सम्बन्धित चित्र के माध्यम से कराया जाता है। 'अ' माने अजगर, 'आ' माने आम, 'ज' माने जहाज जैसी चित्र-शिक्षा से सभी अवगत हैं।

अखबारों तथा पत्र-पत्रिकाओं में कई बार चित्र-फलक अधिक बड़ा होता है और उसके साथ समाचार-वर्णन संक्षप में दिया होता है। अनेक लेख सचित्र ही अधिक शोभते हैं। खासकर अग्रलेख तो चित्र बिना जमता ही नहीं है। पत्रिकाओं पर कवर-चित्र देखकर ही पत्रिका पढ़ने अथवा खरीदने का मन करता है।

कोई समय था जब कॉमिक्स की पत्रिकाएं सर्वाधिक पढ़ी जाती थीं। खासकर बच्चे तो येनकेन प्रकारेण कॉमिक्स साहित्य खरीदकर या भाड़े लाकर पढ़ते ही पढ़ते।

लेकिन जिस रफ्तार से समय वैज्ञानिक उत्कर्ष दिखा रहा है उससे लगता है एक नई तरह की भाषा, संवाद याकि मनोभाव प्रकट करने का युग दस्तक देता जा रहा है। पिछले एक दशक का ही सिंहावलोकन करें तो ट्विटर, फेसबुक, व्हाट्सअप के माध्यम से एक नई भाषा का उदय हुआ दिखाई दे रहा है। यही क्यों, बहुत सारे उच्चारण स्थल बदल गये हैं। वह शब्दावली भी नहीं रही। ऐसे में लेखन भी शार्टकट की पगडंडी पकड़े हुए है।

शुभ विवाह

शिवम डूसेजा एवं निधि भंडारी का शुभ विवाह 20 अप्रेल को देहरादून में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वर-वधू के साथ मित्र सुहैल शेख, पवनजीत कौर, विकल्प मेहता तथा करणसिंह। उल्लेखनीय है कि सभी भारतीय मित्र शिकागो से देहरादून शादी में शरीक होने आए थे।

श्रीमती किरण-सुधीर कोठारी की सुपुत्री निधि का विवाह श्रीमती विद्यादेवी-प्रवीणकुमार मेहता के सुपुत्र भाविन के साथ 24 अप्रेल को कामली घाट में सम्पन्न हुआ। शब्द रंजन की बधाई।

उदयपुर में डॉ. हितेश की साहित्यिक भेंट

डॉ. हितेश व्यास राजस्थान के विविध सरकारी महाविद्यालयों में अध्यापन के पश्चात सेवानिवृत्त हो पूना में अपने पुत्र के साथ रह रहे हैं। उनकी सर्वाधिक सेवाएं कोटा कॉलेज में रहीं सो वहीं इनका निवास स्थल है। एक पुत्री उदयपुर ब्याही है सो मिलने आये। उसी दौरान यहां निवास कर रहे तीन वरिष्ठ साहित्यिक मित्रों से भेंट की। अलग-अलग यह मुलाकात रही। पूना जाकर उन्होंने उसकी जो झलकी भेजी, वह यहां प्रकाशित है। - **सम्पादक**

मिलना गीतकार किशन दाधीच से :

9 अप्रेल दुपहरिया में मैं वरिष्ठ गीतकार किशन दाधीच से मिलने उनके निवास 3, माधव विहार, शोभागपुरा गया। सत्तर पार की वय में उनकी पहली कृति 'गीत समय' नाम से आई है। इस कृति की भूमिका नंद चतुर्वेदी तथा प्रस्तावना डॉ . जीवनसिंह द्वारा लिखी गई है। अंतिम आवरण पर डॉ. संगम मिश्रा, डॉ. महेन्द्र भानावत और डॉ. श्रीनिवासन अय्यर के कथन हैं। यह कृति उन्होंने मुझे भेंट की।

बड़ी देर तक हम राजस्थान के गीतकारों के सौम्य स्वभाव और मंचीय ओळखाण को याद करते नंदजी, ताराप्रकाश जोशी, कुमार शिव हमारी स्मृतियों के केन्द्र में रहे। उसी दिन किशन दाधीच ने मुझे जो टीप लिख भेजी वह इस प्रकार थी-

'चिलचिलाती धूप में मित्र हितेश व्यास का आना और मुझे अपने स्नेहसिक्त स्पर्श से नहला जाना इस दौर में कितना अकल्पनीय है। मुझे एकबार स्मृतिशेष अग्रज गीतकार कुमार शिव ने यह कहा कि अब 'गीत संध्या' का समय गया। कविता के रस स्त्रोत लगातार सूखते जा रहे हैं। जिंदगी का संघर्ष अब इतना जटिल हो गया है कि 'गीत दुपहरी' लिखी जानी चाहिए। हितेश व्यासजी की संगत में कल गीत दुपहरी के व्यापक विमर्श की खुमारी बहुत दिनों तक रहेगी। अतीत के सुखद प्रसंगों को भी बहुत शिद्दत से याद किया। इस कठिन और बाजारू दुनिया में हितेश व्यास जैसे मित्र बहुत कम रह गए हैं।'

मिलना कवि-कोविद सदाशिव श्रोत्रिय से :

इसी दिन संध्या को मैं वरिष्ठ कवि और विचारक सदाशिव श्रोत्रिय से मिलने गया। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी संतोष श्रोत्रिय से भी मुलाकात हुई। हम 2 घंटे साथ रहे। साहित्य को बातचीत के केन्द्र में रहना ही था। पिछले दिनों मैंने उनकी किताब 'कविता का पार्श्व' पर पांच पृष्ठ का आलेख लिखा था। उस पर उनका अद्‌भुत कृतज्ञता ज्ञापन आया।

1989 में उनका पहला कविता संकलन 'प्रथमा' आया। उसके 23 वर्ष बाद उनका दूसरा काव्य संग्रह 'बावन कविताएँ' आया। फिर उनके दो निबंध संचयन आये। उसके बाद उन्हीं की कविताओं पर लिखी किताब 'कविता का पार्श्व' आई। राजस्थान में हो रहे काव्य-सृजन की विस्तृत बातचीत के दौरान कोरोनाकाल में काल कवलित हुए सृजनधर्मियों पर शोकाभिव्यक्ति के साथ हमने उनके साहित्यिक अवदान को रेखांकित किया। श्रोत्रिय से हुई यह भेंट अविस्मरणीय रहेगी।

मिलना लोकसाहित्यकार डॉ. महेन्द्र भानावत से :

11 अप्रेल की पूर्वान्ह मैं डॉ. महेन्द्र भानावत के चेतक सर्किल स्थित कार्यालय 'पार्श्वकल्ला' गया। मुझे 'शब्द रंजन' (संरक्षक - महेन्द्र भानावत) का वह अंक लेना था जिसमें मेरा भानावतजी की अप्रकाशित काव्य-पोथी 'नाम में क्या धरा है' पर लिखा आलेख छपा था। इसकी मित्र सदाशिव ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। भानावत साहब पिछले दिनों अस्वस्थ रहे और अहमदाबाद चिकित्सार्थ गये थे। कार्यालयकर्मी राजेन्द्र पालीवालजी ने अन्य कर्मी देवीलाल मीणाजी के साथ मुझे भानावतजी के कृष्णपुरा स्थित आवास पर पहुँचवाया।

महेन्द्रजी के बड़े भाई डॉ. नरेन्द्र भानावत का मैं जयपुर में शिष्य रहा हूँ। वर्ष 1983- 84 में मैं राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से एम. फिल कर रहा था तब मैंने उनकी काव्यकृति की समीक्षा की थी, जो एक जैन पत्रिका में प्रकाशित हुई। उनके सुपुत्र डॉ. संजीव भानावत मेरे मित्र हैं। संजीव राजस्थान वि. वि . जयपुर के पत्रकारिता विभाग के पुरोधा रहे हैं। दुर्योगवश डॉ. नरेन्द्र भानावत और श्रीमती शान्ता भानावत जो स्वयं अच्छी लेखिका थीं, इस असार संसार में नहीं रहे।

डॉ. भानावत के साथ डॉ. हितेश व्यास

84 वर्षीय महेन्द्रजी ने लोकसाहित्य का विपुल सृजन किया है। उनकी 101 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। लोकसाहित्य पर ही उनकी डॉक्टरेट है। उनके ग्रन्थों और उन्हें मिले पुरस्कारों और सम्मानों की सूची सुदीर्घ है। पुणे में मैं उनकी शिष्या मालती शर्मा से एकाधिक बार मिला। मालती शर्मा ने मुझे अपनी कई कृतियाँ भेंट कीं। डॉ. भानावतजी ने 'परम्परा का लोक' नाम से उनकी श्रेष्ठतम कृति का सम्पादन किया। अभाग्यवश वे अब नहीं रहीं।

डॉ. भानावतजी ने अपने पुत्र-पुत्रियों के नाम भी साहित्यिक रखे हैं। पुत्र मुक्तक और तुक्तक, पुत्रियाँ कविता और कहानी। सभी पीएच.डी.। दुर्भाग्यवश मुक्तक असमय काल कवलित हो गये। डॉ. तुक्तक उनका कार्य संभाल रहे हैं। डॉ. कहानी स्थानीय मीरां कन्या महाविद्यालय में चित्रकला की प्रोफेसर हैं।

भानावतजी की बहूरानी रंजना जो शब्द रंजन की संपादिका है, ने चाय बनाई, जबकि उन्हें एक विवाह समारोह में जाना था। इस बीच डॉ. भानावत के मित्र, सुप्रसिद्ध शायर और फोटोग्राफर डॉ. इकबाल सागर से भी मेरी अच्छी भेंट हो गई। भानावतजी जहां अपना लेखन कर रहे थे वहां ककसाड़ और रूड़ौ राजस्थान पत्रिकाएं थीं जो उन्होंने सहर्ष मुझे दीं। ककसाड़ दिल्ली से प्रकाशित मासिक पत्र है जो जनजाति साहित्य-कला-संस्कृति को समर्पित है। उसमें बिहार के सुधी लेखक अश्विनीकुमार 'आलोक' द्वारा डॉ. भानावतजी पर लिखा सार्थक साक्षात्कार छपा है।

मैं उनके वहाँ घण्टों बैठा रहा और उनके जीवन और कर्म को लेकर अनंत बातें कीं।

मंहगाई अधमरा शोर!

महंगाई! नहीं!
लोग खूब कमाते हैं!
पेंटर भी सात सौ रूपया..
बाजार मजे में हैं !
पैट्रोल जलाने वाले जानें
लोक!
सदा दिवाळी संत के
आठों पहर आनंद।
मित्र, मंहगाई आज का मुद्दा नहीं है!
लोग महंगाई के आदी हो गए।
यह अब
सस्ती राजनीति करने वालों का शोर
हो गया है
अधमरा!

-बी. एल. माली

दृष्टिबाधित बच्चों को बल्ला-बॉल भेंट

उदयपुर (वि.)। नारायण सेवा संस्थान द्वारा राजकीय प्रज्ञाचक्षु उच्च माध्यमिक आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों को क्रिकेट बेट व बॉल भेंट की गई। प्राचार्य नीलम माहेश्वरी ने बताया कि संस्थान ने विद्यालय में अध्ययनरत 51 बच्चों को उनके आयुवर्ग के अनुरूप क्रिकेट बेट दिए जबकि बॉल विशेष रूप से प्रज्ञाचक्षु खिलाड़ियों के लिए ही थी। इस अवसर पर संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल, जनसम्पर्क अधिकारी विष्णु शर्मा 'हितैषी', भगवानप्रसाद गौड़ तथा शिक्षक रमिला पगारिया, फारूक खान मौजूद थे।

अपना देश अपनी संस्कृति

जालमसिंह की करामात

झाला जालमसिंह एक यति की कृपा से साधारण सिपाही से पूरी झालावाड़ रियायत का स्वामी बन बैठा। वह नाथद्वारा के पास केसुली करोली गांव का रहने वाला था।

एकबार जालमसिंह सेना की एक टुकड़ी के साथ गुजरात जा रहा था । रास्ते में थोड़े विश्राम के लिए वह पालनपुर ठहरा। वहां उसने वर्षों से नहीं मिले अपने गुरु यति से भेंट की। यति ने सेना के सारे सिपाहियों को मंशा भोजन कराया। इच्छानुसार भोजन पाकर सभी सिपाही बड़े अचरज में पड़े।

रात को यतिजी ने जालमसिंह के लिए एक हवेली में सोने की अच्छी व्यवस्था कर दी और रूई के दो फोये देते हुए कहा- रात को तुम्हें जब भी किसी चीज की जरूरत पड़े तुम इन फोयों को जला देना। इससे तुम मनचाही चीज प्राप्त कर लोगे।

जालमसिंह ज्योंही हवेली में सोने के लिए पहुंचा तो उसे यह देख बड़ा अचरज हुआ कि उसके सोने वाले ढोलिए पर कोई रूपसी सोयी हुई है। वह पहले तो थोड़ा सकपकाया पर अंत में उसे जगाया।

जागने पर वह महिला हक्कीबक्की रह गई। उसे घोर आश्चर्य हुआ कि वह कब कैसे अपने घर बीकानेर से यहां पहुंच गई। जालमसिंह ने तब यतिजी के कहे अनुसार रूई के दोनों फोये जलाये। उन्हें जलाते ही दो सेवक हाजिर हुए। वे पानी-पानी कहते रहे। जालमसिंह इस रहस्य को नहीं समझ पाया। उसने सेवकों को उस महिला को उसके घर सुरक्षित पहुंचाने को कहा। सेवकों ने तत्काल आदेश का पालन किया और उस महिला को पहुंचाते ही पुन: हाजिर हुए।

उनके आने पर जालमसिंह ने कहा - मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। मैं तो केवल तुम लोगों के बारे में जानना चाहता हूं कि आखिर ऐसा क्या रहस्य है जिससे यह सब नाटक मैं देख रहा हूं। सेवकों को जालमसिंह पर पूरा भरोसा हो गया। उन्होंने अपनी बीती घटना के संबंध में बताते हुए कहा- हम दोनों भाई आप ही की तरह सेना की एक टुकड़ी के साथ जा रहे थे कि यति ने हमें भी यहां रोका और इसी हवेली में इसी ढोलिए पर सुलाया साथ ही थोड़ी दूरी पर पीने का पानी रखवा दिया। पलंग और पानी की दूरी के बीच एक खड्डा बनवा रखा था जिसकी जानकारी उन्हें नहीं थी। वह खड्डा इस तरह पाट रखा था कि किसी को उसका पता नहीं चला।

रात को जब उन्हें प्यास लगी तो दोनों मटकी की ओर बढ़े कि अचानक उस खड्डे में जा पड़े। खड्डे में गिरते ही वहीं एक तलवारधारी छिपा हुआ था जिसने तलवार से उन्हें मौत के घाट उतार दिया। उनके खून से उसने रूई रंगी और यति को लेजाकर दी। यति ने रूई के फोये बनाकर उन्हें अपने मंत्र से साधा। उस मंत्र के बल पर जहां जब भी वे फोये जलाये जाते हैं, उन्हें उपस्थित होकर हाजरी बजानी पड़ती है।

सेवकों से यह बात सुन जालमसिंह भी डरा कि कहीं उसकी भी वही स्थिति न हो जाय। अत: उसने उन दोनों सेवकों के सहयोग से किसी तरह उस सारी रूई का भेद प्राप्त किया और सोये हुए यति को ही मौत के घाट उतरवा दिया। जालमसिंह वह रूई लेकर युद्ध के लिए प्रस्थान कर गया।

युद्धभूमि में उसने रूई के फोये जलाये कि दोनों सेवक हाजिर हुए और देखते-देखते उन्होंने दुश्मनों का सफाया कर दिया। जालमसिंह की इस विजय से चारों ओर उसका दबदबा बढ़ गया। इस जीत से कोटा दरबार भी बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने विजय की खुशी में जालमसिंह को विशिष्ट मान दिया परन्तु उन्हें उसकी करामात का भय भी सताने लगा। अंत में उन्होंने झालावाड़ का अलग से परगना बनाकर ही उसे सौंप दिया तब जाकर संतोष की सांस ली।

- म. भा.

विक्रम विवि में डॉ. सहगल की पुस्तक लोकार्पित

उज्जैन (ह. सं.)। विक्रम विश्वविद्यालय की हिन्दी अध्ययनशाला में प्रसिद्ध लोकसंस्कृतिविद् डॉ. पूरन सहगल की पुस्तक 'अठारह सौ सत्तावन स्वतंत्रता संग्राम का जुझारू सेनानायक हीरासिंह जमादार' का लोकार्पण विशिष्ट वैचारिक छाप छोड़ गया। संगोष्ठी को संबोधित करते कुलपति प्रो. अखिलेशकुमार पांडेय ने कहा कि

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत अपने अंचल में स्वाधीनता संग्राम में योगदान देने वाले गुमनाम शहीदों को याद करें। आज भी उनके परिवारजन गुमनामी की जिंदगी जी रहे हैं। ऐसे में डॉ. पूरन सहगल की पुस्तक महान वीर हीरासिंह जमादार सहित महिदपुर, सोंधवाड़ एवं आसपास के क्षेत्र में कार्य करने वाले अनेक क्रान्तिकारियों की याद दिलाती है। विश्वविद्यालय द्वारा इस प्रकार के मौखिक और दस्तावेजी साहित्य को प्रकाशित करवाया जाएगा।

कुलसचिव डॉ. प्रशांत पुराणिक ने महिदपुर के अमर सपूतों को याद करते कहा कि महिदपुर के हीरासिंह जमादार, अमीन सदाशिवराव निखुलकर जैसे अनेक लोगों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। किसानों, आम नागरिकों और विद्रोही सैनिकों ने इस क्रान्ति की आग को जगाए रखा।

कला संकायाध्यक्ष प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा ने कहा कि इतिहास मृत देह के समान होता है, जिसे लोकसाहित्य और संस्कृति प्राणवान बना देते हैं। डॉ. सहगल द्वारा वाचिक परम्परा से प्राप्त की गई लोकगाथा इतिहास, जातीय स्मृतियों और समाज जीवन के अनेक अनछुए पहलुओं को उद्घाटित करती है। पुस्तक से हीरासिंह जमादार के महान साहस, शौर्य और सत्तावन की क्रान्ति में उनके अविस्मरणीय योगदान का परिचय मिलता है। अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रान्ति का स्वरूप सर्वसमावेशी था। पुस्तक से भारत की आजादी में मालवा, सोंधवाड़ और महिदपुर क्षेत्र की अविस्मरणीय भूमिका के अनछुए पहलू उद्घाटित हुए हैं।

इलाहाबाद विवि के प्रो. शिवप्रकाश शुक्ला ने स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में हाशिए के लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। पुस्तक लेखक डॉ. सहगल ने कहा कि लोक-समुदाय में कार्य करने के लिए दुनिया को भूलना होता है। लोकसाहित्य की उपलब्धता के लिए परिश्रम जरूरी है। गहरी निष्ठा और समर्पण के बिना लोकइतिहास का संग्रह संभव नहीं है। महिदपुर के अनेक क्रान्तिकारियों ने छापामार युद्ध पद्धति का इस्तेमाल किया था जिसके चिन्ह आज भी उन क्षेत्रों में मिलते हैं। इतिहास जब ठिठक जाता है, तब लोकसाहित्य राह दिखाता है। लोक तमाम प्रकार की घटनाओं को सँवारता है।

इस अवसर पर डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा, डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा, प्रो. गीता नायक, डॉ. सुशील शर्मा, डॉ. अजय शर्मा, डॉ. श्वेता पंड्या, कायथा, डॉ. हेमन्त लोदवाल, हीना तिवारी, डॉ. उमा गगरानी ने वैचारिक मंथन में महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दी।

मन की कचोट

उस समय मेरा मन मुझे बहुत कचोटता है
जब मैं किसी गुणी का गुण-गान नहीं करता हूं,
किसी पूज्य को प्रणाम नहीं करता हूं,
किसी उपकारी के प्रति कृतज्ञता प्रकट नहीं करता हूं,
किसी प्रकाश की ओर पीठ कर लेता हूं,
किसी अन्याय को सह जाता हूं,
किसी विश्वास को ठेस पहुंचाता हूं
किसी जिज्ञासा को गुमराह करता हूं,
किसी गलती को सही साबित करता हूं,
किसी मजबूरी का अनुचित लाभ उठाता हूं,
किसी अयोग्य की चमचागीरी करता हूं,
किसी अमूल्य क्षण का दुरुपयोग करता हूं,
जीवन जीकर भी जैसे रीता सा लगता है।

-शासनश्री मुनि सुखलाल

शिक्षा-सेवा के आदर्श टीकमचन्दजी

आज जब शिक्षा एक उद्योग के रूप में फल-फूल रहा है वहां टीकमचन्दजी आसवरा हमारे बीच शिक्षा-सेवा के आदर्श बने हुए हैं। सेवा के यों तो अनेक क्षेत्र हैं पर बदले में मेवा प्राप्त करने की होड़ बढ़ती जा रही है।

ऐसी स्थिति में टीकमचन्दजी ने उदयपुर के हिरणमगरी सेक्टर-4 में ज्ञान मन्दिर रूकूल खोलकर यह दिखा दिया है कि स्कूल वही उत्तम होता है जहां हर तपके का बालक शिक्षा ले सके। फीस के अभाव में कोई बच्चा शिक्षा से वंचित नहीं हो और जहां पढ़ाने वाले भी शिक्षा-सेवा-व्रती हों।

पिछले छह दशक से मैं टीकमचन्दजी को देख रहा हूं। साधारण साइकिल की सवारी किये वे आज भी उसी भावभूमि में जी रहे हैं। संस्था पर तनिक भी आर्थिक बोझा नहीं बनकर प्रतिवर्ष ही वे अपनी सादगी को लेकर स्कूल के लिए चन्दा लाते हैं ताकि बच्चों पर अर्थ-भार न बढ़े।

कोई दो-ढाई दशक बाद अचानक बळती लाय में दिन को 14 अप्रेल, महावीर जयंती पर जब वे मुझसे मिलने, मेरी कुशलक्षेम पूछने आये तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मैंने बड़े संकोच में आकर उनसे निवेदन किया कि फोन ही से बातचीत हो जाती तो आपको यहां तक आने का कष्ट नहीं करना पड़ता।

तनिक मुस्कान लेते वे बोले, 'प्रथम तो मैं अपने पास मोबाईल जैसी बला पालता ही नहीं। इसस कई तरह की उलझनें और राह चलते व्यवधान पड़ता है। फालतू की बातचीत अधिक करनी पड़ती है। बार-बार घर वाले भी पूछते हैं कहां हैं, कैसे हैं ? दूसरी बात मैं वर्षों से एक समय भोजन करता हूं सो संध्या को ठीक समय अपने ठाण पहुंच जाता हूं। पानी भी बमुश्किल एक-डेढ़ लोठा पीता हूं।'

डॉ. महेन्द्र भानावत से चर्चा करते टीकमचंदजी

मैं बोला, डाक्टर तो कहते हैं, खूब पानी पीओ तो वे बोले, मुझे देख लो सत्याशी वर्ष की उम्र में भी पूर्ण स्वस्थ हूं। आपने जैसा पहले देखा, कोई बदलाव आया क्या ? मैं बोला उम्र ने जरूर मामूली पन दिखाया है जैसा मेरा भी है, बाकी तो सबकुछ टंच है।

करीब घण्टे भर की बैठक में अति साधारण किन्तु असाधारण व्यक्तित्व लिये टीकमचन्दजी ने अपने बालपन के पन्ने खोलते बताया- 'जब 13 साल का था तब पोस्ट ऑफिस में मैसेंजर बॉय के रूप में नौकरी शुरू की।

तार आदि बांटने का काम मेरे जिम्मे था। धीरे-धीरे मेरा सेवा-समर्पण देखते प्रमोशन होता रहा और मैं हेड पोस्ट मास्टर बन गया। मैं सुबह से संध्या तक अपने काम में दत्तचित्त रहता। किसी को निराश नहीं करता। लपक-लपक कर लोगों की समस्या हल कर फटाफट उनका काम पहले कर उन्हें राजीखुशी सीख देता तो ही मुझे संतोष मिलता।

सेवानिवृत्ति के बाद मेरी पेंशन शुरू हुई तो उसी से गुजारा कर रहा हूं। स्कूल से कुछ भी लेने और मेरे पर खर्च करने का सवाल ही नहीं। मेरा व्यक्तिगत कोई खर्चा नहीं। खानेपीने का कोई शौक नहीं। मितव्ययता से रहता हूं तो काहे का खर्च! परिवार वालों पर भी मेरा असर पड़ा है। सभी मेरी तरह ही स्वावलम्बी, अपरिग्रही और आलतू-फालतू के झंझट से मुक्त हैं।'

उन्होंने बताया कि हालांकि मैं गृहस्थी हूं पर एक वृद्धाश्रम खोल रखा है सो मैं भी उन्हीं के साथ रहता हूं। सभी वृद्ध-मित्र अपना काम आप कर लेते हैं। अभी तो कोई समस्या नहीं है, आगे तो भगवान की मर्जी है। बोले, ज्ञान मन्दिर के वर्तमान में 1700 सदस्य हैं। उनसे सम्पर्क करने दूर-सुदूर जाता हूं तो वे प्रतिवर्ष स्वैच्छिक रूप से देने वाला सेवा-धन देकर मेरे से आत्मीयता बनाये रखते हैं।

मुझे अन्त तक विस्मय भरा संकोच ही रहा कि उन्होंने मेरा कोई आतिथ्य ग्रहण नहीं किया और बोले कि अखबार में पढ़ा कि मुनिजी आपकी कुशलक्षेम पूछने आपके निवास पधारे तो मुझे भी सहज प्रेरणा हो गई सो चला आया और सहज भाव से इतना अच्छा मिलना हो गया।

- म. भा.

बाजार / समाचार

पिम्स में 101 वर्षीय वृद्ध को मिला जीवनदान

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पीटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने 101 वर्षीय वृद्ध का सफल उपचार कर नया जीवन दिया है।

पिम्स के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों भेरा रावत (101) को श्वांस लेने में परेशानी की वजह से बेहोशी की हालत में पिम्स हॉस्पीटल में लाया गया। जांच में पता चला कि मरीज की ह्रदय गति बहुत धीमी और कम्पलीट हार्ट ब्लॉक था। इस पर चिकित्सकों द्वारा पहले उनके टेम्परेरी पेसमेकर लगाकर उनकी ह्रदय गति को बढ़ाया गया। बाद में परमानेन्ट पेसमेकर लगाया गया। मरीज के स्वास्थ्य स्थिति में पूर्णत: सुधार हो गया। उनकी हार्ट रेट बिल्कुल नोर्मल होने पर उन्हें हॉस्पीटल से डिस्चार्ज कर दिया गया। यह ऑपरेशन इन्टरवेन्शनल कार्डियोलॉजिस्ट व कन्सलटेन्ट डॉ. महेश जैन, नॉन-इनवेसिव कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. उमेश स्वर्णकार, ऐनिस्थेटिस्ट डॉ. विपिन सिसोदिया, डॉ. आनल, डॉ. यतिन और कार्डियक टीम द्वारा किया गया।

निराश मरीज की सफल घुटना रिप्लेसमेंट सर्जरी

उदयपुर (ह. सं.)। पारस जेके अस्पताल में ऑर्थोपेडिक एवं ज्वाइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. आशीष सिंघल के नेतृत्व में टीम ने रूमेटाइड अर्थराइटिस से पीड़ित 38 वर्षीय मरीज का सफलतापूर्वक टोटल जॉइंट रिप्लेसमेंट किया है। इतनी छोटी उम्र के मरीज का अस्पताल में यह पहला ऐसा मामला है।

डॉ. आशीष सिंघल ने बताया कि मरीज को 24-25 साल की उम्र से ही रूमेटाइड अर्थराइटिस शुरू हो गया था जिससे उनका बायां घुटना धीरे-धीरे क्षतिग्रस्त होता चला गया। बीते 3-4 वर्षों से ऐसी स्थिति हो गई कि उनका कुछ कदम चलना या दैनिक काम करना भी मुश्किल हो गया था। मरीज होटल इंडस्ट्री में नौकरी करता था लेकिन इस बीमारी के कारण उसकी नौकरी भी छुट गई। गत दिनों मरीज को पारस जेके अस्पताल लाया गया। एक्सरे में पता चला कि मरीज का बायां घुटना पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुका है। इस पर टोटल ज्वाइंट रिप्लेसमेंट सर्जरी करने का निर्णय लिया गया। सर्जरी के बाद मरीज पूरी तरह स्वस्थ है। मरीज अब चल सकता है और अपना दैनिक कार्य कर सकता है।

सिंघानिया विवि और जेबिया अकादमी में साझेदारी

उदयपुर (ह. सं.)। ज़ेबिया अकादमी ने हाल ही में सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय (एसपीएसयू) के साथ साझेदारी की घोषणा की है। इस साझेदारी के तहत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) में विशेषज्ञता के साथ 4 वर्षीय बी.टेक सीएसई कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। यह सहयोग इंजीनियरिंग के छात्रों को एआई और एमएल जैसी अत्याधुनिक तकनीक में विशेषज्ञता और कौशल विकसित करने में सक्षम बनाएगा। एक मजबूत पाठ्यक्रम और व्यावहारिक विशेषज्ञता हासिल करके छात्रों को परियोजनाओं में प्रतिस्पर्धा में बढ़त मिलेगी।

ज़ेबिया अकादमी के निदेशक बृजेश कोहली ने कहा कि ज़ेबिया अकादमी का लक्ष्य इंजीनियरिंग को एक ऐसा भविष्य बनाना है जहां हर छात्र का कौशल अपने सर्वोत्तम रूप में उभरकर सामने आए। हर छात्र सिर्फ सैद्धांतिक ज्ञान में ही निपुण न हो बल्कि वह व्यावहारिक ज्ञान में भी उत्कृष्ट बने। हमारे पाठ्यक्रम वर्तमान परिदृश्य और भविष्य के रोडमैप की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किए जाते रहे हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमारे छात्रों को फ़ाइव—फ़िगर जॉब मिले, हम उन्हें बहुत सावधानी से तैयार करते हैं। ज़ेबिया एआई और एमएल को पाठ्यक्रम में शामिल करने, अध्ययन सामग्री बनाने और छात्रों को व्यावहारिक शिक्षा के माध्यम से नौकरी के लिए तैयार करने के लिए रीयल-टाइम प्रोजेक्ट बनाने के लिए फ़ैकल्टी के साथ काम करेगा।

सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय के डीन स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग डॉ. अरुण कुमार ने कहा कि हम हमेशा एसपीएसयू में उद्योग के लिए उपयुक्त वर्कफ़ोर्स बनाने पर ध्यान केंद्रित करते रहे हैं और हमने ऐसे कार्यक्रम तैयार और वितरित किए हैं जो हमारे छात्रों को उद्योग के लिए तैयार नौकरी बनने में मदद करते हैं। भारत में तकनीकी शिक्षा का जो तरीका माना जाता है, इस तरह के सहयोग उस तरीके को परिष्कृत करके हमें बेहतर कल बनाने में मदद करते हैं। पारंपरिक बी.टेक पाठ्यक्रम में आधुनिक तकनीकों को जोड़ने से न केवल हमारे छात्रों को प्रतिस्पर्धा में बढ़त मिलेगी, बल्कि उन्हें उद्योग के लिए तैयार होने में लगने वाले समय को बचाने में भी मदद मिलेगी।

मोतीलाल ओसवाल ने दायरा बढ़ाया

उदयपुर (ह. सं.)। मोतीलाल ओसवाल होम फाइनेंस लि. ने राजस्थान के शाहपुरा में अपनी नई शाखा का शुभारंभ किया है। एमओएचएफएल विशेष रूप से और जबरदस्त तरीके से निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के ग्राहकों की हाउसिंग फाइनेंस से जुड़ी जरूरतों को पूरा करना चाहता है। कंपनी ने भारत सरकार के '2022 तक सभी के लिए आवास' के बेहद महत्वपूर्ण लक्ष्य की दिशा में सार्थक योगदान देने की ओर कदम बढ़ाए हैं।

एमओएचएफएल के चीफ बिजनेस ऑफिसर मनीष सिंह ने कहा कि एमओएचएफएल ग्राहकों को शाहपुरा शाखा के 50 किमी के दायरे में घर खरीदने या बनाने के लिए किफायती होम लोन उपलब्ध कराता है। हम निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के लोगों को बिना किसी परेशानी के किफायती होम लोन प्रदान करने के व्यवसाय से जुड़े हैं। इसके अलावा, सरकार ने भी वित्त-वर्ष 2022-23 में 80 लाख घरों के निर्माण को पूरा करने के लिए 48,000 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। भारत के 12 राज्यों में मोतीलाल ओसवाल होम फाइनेंस की शाखाओं की संख्या अब 105 हो गई है। कंपनी ने इन 12 राज्यों में अपने ग्राहकों तक बेहतर पहुंच के लिए कर्मचारियों की संख्या बढ़ाकर 91600 कर दी है। दिनेश के. स्वामी इस शाखा के प्रमुख होंगे।

नाऊ फंडिंग टुमॉरो लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। सीग्राम्स 100 पाइपर्स का 'प्ले फॉर ए कॉज़' प्लेटफॉर्म बीते वर्षों में ऐसे कार्यों को सहयोग देने में सबसे आगे रहा है, जो समाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

पर्नोड रिकार्ड इंडिया के चीफ मार्केटिंग ऑफीसर कार्तिक मोहिन्द्रा ने कहा कि इस प्रकार ब्राण्ड का मूल प्रस्ताव 'अच्छाई के लिये याद रहें' (बी रिमेम्बर फॉर गुड) अनुभव करने योग्य तरीके से साकार होता है। इस साल 100 पाइपर्स 'प्ले फॉर ए कॉज़' ने एआरओएच फाउंडेशन के साथ साझेदारी में एक वर्ष में 1 मिलियन (10 लाख) पेड़ लगाने का वादा करके भविष्य को ज्यादा हरित बनाने का संकल्प लिया है। 100 पाइपर्स ने यह महत्वपूर्ण कैम्पेन 'अर्थ डे' पर शुरू किया है। 100 पाइपर्स ने भविष्य की तकनीकों को भी अपनाया है और पौधारोपण को समर्पित भारत के पहले पर्यावरण-थीम वाले एनएफटी 'नाऊ फंडिंग टुमॉरो' को लॉन्च किया। 'पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण' की थीम पर आधारित 13 प्रतिष्ठित एनएफटी लॉन्च के 10 मिनट के भीतर सभी बिक गए।

केबीसी ग्लोबल में सिंगापुर बेस्ड फंड मेबैंक ने हिस्सा बढ़ाया

उदयपुर (ह. सं.)। कोविड 19 की चुनौतियों से उबरकर रियल्टी सेक्टर में जोरदार डिमांड देखने को मिल रही है जिससे रियल एस्टेट कंपनियों के शेयरों में तेजी देखने को मिल रही है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए सिंगापुर स्थित फंड मेबैंक किम इएनजी सिक्योरिटीज प्रा. लि. ने केबीसी ग्लोबल में हिस्सेदारी खरीदी है। कंपनी ने एनएसई पर थोक सौदे के जरिए उपलब्ध थोक सौदे के आंकड़ों के अनुसार फंड हाउस ने 9.99 रुपये प्रति शेयर की दर से लगभग 35 लाख शेयर खरीदे। कंपनी ने क्रेडाई नासिक प्रॉपर्टी एक्सपो में भी भाग लिया था, जहां उसने नासिक में किफायती आवास, मिड-सेगमेंट और लक्ज़री हाउसिंग से लेकर 12 प्रमुख प्रोजेक्ट्स को शोकेस किया और सफलतापूर्वक 9 से ज्यादा बुकिंग की।

आईआईएफएल के वाइस प्रेसिडेंट -रिसर्च अनुज गुप्ता ने कहा कि मेटल और कमोडिटी की कीमतें बढ़ने के चलते रीयल एस्टेट कंपनियां प्रोजेक्ट की कीमतें बढ़ा रही हैं, जिससे आगे यह सेक्टर आउटपरफॉर्म कर सकता है। इनके कुछ शेयर डबल डिजिट में हाई रिटर्न दे सकते हैं। रियल्टी शेयरो में जैसे केबीसी ग्लोबल डीएलएफ की बात करे तो इसमें कुछ समय से सस्टेनियल वॉल्यूम देखने को मिल रहा है। यह संकेत है कि शेयर में पॉजिटिव मोमेंटम शुरू हो रहा है। केबीसी ग्लोबल शेयर 2021 में स्प्लिट हुआ था। शॉर्ट टर्म में यह एक अच्छी रैली दिखा सकता है। कंपनी नासिक बेस्ड है और कंपनी का एबिडिटा वित्तीय वर्ष 2021 की दूसरी तिमाही की तुलना में वित्तीय वर्ष 2022 की दूसरी तिमाही में 73 फीसदी और मुनाफा 115 फीसदी बढ़ा है।

पेटीएम आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन का एकीकृत ऐप बना

उदयपुर (ह. सं.)। पेटीएम को नेशनल हेल्थ अथोरिटी ने आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन का एकीकृत ऐप बनाया है। इस साझेदारी के साथ पेटीएम ने नेशनल हेल्थ अथॉरिटी (एनएचए) के एबीएचए को एकीकृत किया है, जिसके माध्यम से यूजर्स इसके ऐप पर अपना यूनीक एबीएचए नंबर बना सकते हैं। पेटीएम ऐप पर एबीएचए का एकीकरण अपने यूजर्स को डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएं देने की कंपनी की पहलों का हिस्सा है। इस साझेदारी के विषय में एनएचए ने सोशल मीडिया पर एक घोषणा भी की है, जिसका लक्ष्य अपना एबीएचए नंबर बनाने में यूजर्स की मदद करना है। एक ट्वीट में एनएचए ने कहा है कि आप अपने पेटीएम ऐप से अपना एबीएचए नंबर बना सकते हैं। अपना पेटीएम ऐप खोलें और एबीएचए को सर्च करें।

एनएचए के साथ साझेदारी करने से, पेटीएम सबसे बड़ा कंज्यूमर प्लेटफॉर्म बन गया है, जो एंड्रॉइड और आईओएस, दोनों यूजर्स को एबीएचए नंबर बनाने की सुविधा दे रहा है। भारत सरकार का एबीएचए भारतीयों का डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड बनाने में जरूरी है। इसके द्वारा वे अपने हेल्थ डेटा तक पहुँच सकते हैं और अपनी सहमति से उसे भागीदार स्वास्थ्य रक्षा प्रदाताओं और अदाकर्ताओं (पेअर्स) के साथ साझा कर सकते हैं। एबीएचए नंबर के माध्यम से यूजर्स अपने पर्सनल हेल्थ रिकॉर्ड्स (पीएचआर) तक पहुँचकर उन्हें लिंक कर सकते हैं। इसके अलावा दवा की दुकानों से खरीदारी कर सकते हैं, लैब टेस्ट बुक कर सकते हैं, स्वास्थ्य बीमा खरीद सकते हैं, मेडिकल लोन के लिये आवेदन कर सकते हैं आदि।

एचडीएफसी बैंक के लाभ में 23 प्रतिशत का उछाल

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक का स्टैंड, लोन प्रॉफिट पिछले वित्तवर्ष 2021-22 की अंतिम तिमाही के मुकाबले में जनवरी मार्च 2022 में 22.8 फीसदी उछल गया। इस उछाल के साथ बैंक का प्रॉफिट मार्च 2022 तिमाही में 10055.2 करोड़ हो गया। उसके पिछले वित्त वर्ष 2020-21 में बैंक को समान तिमाही में 8,186.50 करोड़ रूपए का मुनाफा हुआ था। बैंक ने रेगुलेटरी फाइलिंग में यह जानकारी दी है।

फाइलिंग के मुताबिक मार्च 2022 तिमाही में 2989.5 करोड़ रूपए का टैक्स चुकाने के बाद बैंक को करीब 10 हजार करोड़ रूपए का नेट प्रॉफिट हुआ। जनवरी-मार्च 2022 में बैंक को सालाना आधार पर 22.8 फीसदी अधिक 10055.2 करोड़ रूपए का नेट प्रॉफेट हुआ। बैंक को कुल 41085.78 करोड़ रूपए की आय हुई, जबकि पिछले साल की समान तिमाही में बैंक को 38,017.50 करोड़ रुपये की आय हुई थी। 31 मार्च, 2022 को समाप्त हुई तिमाही के लिए बैंक का कुल राजस्व पिछले साल की इसी तिमाही में 24,714.1 करोड़ रु. से 7.3 प्रतिशत बढ़कर 26,509.8 करोड़ रु. हो गया। ट्रेडिंग आय हटाकर कुल राजस्व 31 मार्च, 2021 को समाप्त हुई तिमाही में 24,059.0 करोड़ रु. से 10.4 प्रतिशत बढ़कर 31 मार्च, 2022 को समाप्त हुई तिमाही के लिए 26,550.2 करोड़ रु. हो गया।

'आईपी और युवा : बेहतर भविष्य के लिए नवाचार' पर राष्ट्रीय सम्मेलन

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल (आईक्यूएसी) के सहयोग से गीतांजलि इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी द्वारा 'आईपी और युवा : बेहतर भविष्य के लिए नवाचार' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

मुख्य वक्ता डॉ. रंजीत बार्शिकर ने पेटेंट और इसके महत्त्व की व्याख्या करते हुए जेनेरिक और ब्रांड बाजार के बीच अंतर का मार्गदर्शन किया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने शोध के लिए पेटेंट दाखिल करने के लिए भी निर्देशित किया। वक्ता डॉ. अजीत सिंह नवाचार और उसके चक्र के लिए निर्देशित किया।

प्रारंभ में गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी के प्रिंसिपल डॉ. एम.एस राठौर ने विश्वविद्यालय का संक्षिप्त विवरण दिया। सम्मेलन को गीतांजली विश्वविद्यालय के वीसी डॉ. एफ. एस मेहता तथा गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के सीईओ प्रतीम तंबोली ने भी संबोधित किया। एंकरिंग दीक्षा अग्रवाल एवं रिया नायक ने की जबकि धन्यवाद डॉ. उदीची कटारिया ने ज्ञापित किया।

गोपीचन्द भरथरी गाथा.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

राजा राज करो नगरी में दुनियां रखो कुसाल।
मोहनलाल का दुसमन ऊपर नाखे भवानी जाल।।

दूसरी सन् 1924 की 'भर्थरी नाटक' नाम से है। इसका प्रकाशक भी वही श्रीधर शिवलालजी है। इस पर लेखक व संशोधक का नाम वैवहा निवासी बाबूराम शर्मा वाजपेयी दिया हुआ है।

तीसरी पुस्तक 'ख्याल-गोपीचन्द' जयपुर के बाबू कन्हैयालाल बुकसेलर द्वारा प्रकाशित है। इसमें लेखक की छाप इस मुजब है-

बाल व्यास उस्ताद हमारे कहते मोतीलाल।
इन्दौर के माय सिखाय हमने गोपीचन्द का ख्याल।।

चौथा 'ख्याल भरथरी चरित्र' नाम से है। इसकी अंतिम पंक्तियां हैं-

जोग है जो हरि भला आठ पहर संग्राम।
आठ पहर के बीच में जिसे राखे भगवान।।
चुटिया काट चेला किया कान दिये हैं फाड़।
पीठ ठोंक दीनी गोरखनाथजी योग अमर हो जाय।।
कलि में अमर राजा भरथरी जी।।

पांचवीं 1963 में सिद्धेश्वर सेन रचित 'मालवी लोकनाट्य माच राजयोगी भरतरी' है। हमने सिद्धेश्वर सेन और उनकी खेल मण्डली को आमंत्रित कर कलामण्डल में राजयोगी भरतरी का प्रदर्शन भी करवाया था।

इन पुस्तकों के अतिरिक्त एक हस्तलिखित गुटका 10 गुना 7.5 से.मी. का मेरे पास संगृहीत है। इसमें प्रारंभ के दो पन्ने नहीं हैं। इसके बाद 90 पन्ने हैं। इनमें प्रति पन्ना 5-5 पंक्तियों का तथा शेष सभी पन्ने 6-6 पंक्तियां लिये हैं। 180 पृष्ठों के बाद के पन्नों पर उनकी संख्या नहीं लिखी है। कुल 902 छंदों से पूर्ण 'गोपीचन्द' के इस आख्यान के अंत में लिखा है-

भज लै रै नाथ नैं दे सापति राज।।
भजन कींया रे मेरा लाल हौई निसतारा जी।। 902।। इति
श्री गोपीचंद संपुरण।। रांम बाच बीचारे।।
रांम रांम रांम रांम रांम रांम

मौखिक रूप में यह गाथा मालवी, राजस्थानी, बुंदेलखण्डी, छत्तीसगढ़ी, अवधी तथा इनकी उप बोलियों में विविध गायकी तथा आदिवासी समुदाय में गोपीचंद भरथरी तथा भरथरी पिंगला नाम से प्रचलित है जो कथा, गाथा, आख्यान एवं वार्ता रूप में कथन, वाचन और गायन के माध्यम से जनरंजन का सशक्त माध्यम बनी हुई है। इसका संग्रह मनासा के डॉ. पूरन सहगल, भोपाल के बसंत निरगुणे, अहमदाबाद के डॉ. भगवानदास पटेल, लखनऊ की डॉ. विद्याविन्दुसिंह तथा बांसवाड़ा की मालिनी काले आदि ने किया है।

मनीषी विद्वान ब्रजेन्द्रकुमारजी सिंहल ने बड़े मनोयोग से गोपीचन्द्र भरथरी की जगह-जगह संगृहीत, संकलित, अलभ्य सामग्री को प्रस्तुत कर जो ज्ञातव्य दिये हैं उनसे अन्य विद्वान, सुधीजन तथा शोधकर्मी भी प्रेरणा पाकर उन अनेक चरित्रों का उद्धार करेंगे जो अब तक दबे, कुचले, भटके, अजान अंधेरे की कालिख में गुमनाम पड़े हैं।

नोट :- पुस्तक गोपीचन्द्र भरथरी-वैराग्य बोध-गान, जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, श्यामला हिल्स, भोपाल-462002 से प्रकाशित है। साढ़ा छह सौ से अधिक पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य मात्र 300 रूपया है।

विश्वभाषा के रूप में हिन्दी की प्रतिष्ठा अनवरत : डॉ. विद्याविंदुसिंह

चेन्नई में 28 अप्रेल को हिन्दी एवं अवधी लोकसाहित्य-संस्कृति की प्रख्यात लेखिका डॉ. विद्याविंदुसिंह का तमिलनाडु हिंदी अकादमी के तत्वावधान में अकादमी संस्थापक कीर्तिशेष डॉ. बालशौरि रेड्डी के निवास पर भावभीना आयोजन साहित्यकार बी. एल. आच्छा की अध्यक्षता में रखा गया।

प्रारंभ में अकादमी महासचिव डॉ. दिलीप धींग ने कहा कि कोरोनाकाल के पश्चात डॉ. सिंह का आगमन अकादमी के लिए श्रेष्ठतम यादगार उपस्थिति बन गया है। उन्होंने अपनी सद्य प्रकाशित 'पुरुषार्थ के दीप' कृति उन्हें भेंट की जिस पर डॉ. सिंह ने कहा कि अहिंसा आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उसमें आराधना के लिए सद्भाव और देने का भाव बहुत जरूरी है। डॉ. विद्याविंदुसिंह ने कहा कि साहित्य के रूप में रेड्डीजी जो विरासत छोड़ गये, वह कालजयी है। उन्होंने वर्तमान पीढ़ी को सीख दी कि वह पुरखों की थाती को नहीं भूले और विरासत को आगे बढ़ाए। हिन्दी की प्रतिष्ठा भारतीय अस्मिता की कालजयी प्रतिष्ठा है। रेड्डीजी ने अपनी लेखनी के माध्यम से आव्हान किया कि बच्चों की जबान से हिन्दी का पीठ-पाठ शुरू होना चाहिये। हिंदी विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होती बढ़ रही है। उन्होंने उम्मीद जताई कि संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी हिंदी को मान्यता मिल जाएगी।

बी.एल. आच्छा ने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में श्रेष्ठतर साहित्यिक अवदान के लिए डॉ. सिंह को नारी अस्मिता, संस्कृति और सांस्कृतिक प्रतिमान की युगबोधिनी का सम्बोधन देते कहा कि परदु:ख कातरता सबसे बड़ा मूल्य है, जिसमें संवेदना का संप्रेषण होता है। डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन ने कहा कि नागरी लिपि का प्रयोग करके भारतीय भाषाओं की नजदीकियां बढ़ाई जा सकती हैं। प्रहलाद श्रीमाली और एस. अनंतकृष्णन ने भी विचार रखे। इस अवसर पर अकादमी की ओर से डॉ. विद्याविंदुसिंह और डॉ. राजलक्ष्मी का सम्मान किया गया। धन्यवाद सचिव जे अशोककुमार शास्त्री ने दिया।

- डॉ. दिलीप धींग

झीलों की नगरी की झरना पार करेगी इंग्लिश चैनल

उदयपुर (ह. सं.)। झीलों की नगरी की झरना कुमावत जुलाई में इंग्लिश चैनल रिले टीम में भागीदारी करते हुए इंग्लिश चैन पार करेगी। झरना व उसकी पांच सदस्यीय टीम इंग्लेण्ड के डोवर बीच से फ्रांस तक का 33 किलोमीटर का जोखिम भरा सफर तय करेगी। इस वर्ष आयोजित की जा रही रिले रेस में झरना एकमात्र भारतीय अंतर्राष्ट्रीय ओपन वाटर स्मिर है।

झरना की माता समाजसेविका सुषमा कुमावत ने बताया कि इंग्लिश चैनल फेडरेशन की ओर से रिले टीम के लिए झरना का सलेक्शन हुआ है। वह पिछले तीन साल से ओपन वॉटर स्विमिंग कर रही हैं। विगत 12 वर्ष से इंग्लेण्ड एसेक्स में रह रही झरना ने पिछले वर्ष ही लंदन स्विमिंग मैराथन में हिस्सा लिया था।

झरना ने बताया कि इंग्लिश चैनल रिले का आयोजन स्विमटायका नामक इंग्लिश चैरिटी संस्थान की ओर से किया जा रहा है। यह संस्थान दक्षिण एशिया, अमेरिका, इंडोनेशिया में समुद्री तटों के बच्चों व स्विमिंग कोच आदि को मुफ्त स्विमिंग की शिक्षा देता है। समुद्री तटीय क्षेत्रों में हर वर्ष हजारों लोगों की डूबने से असामयिक मौत हो जाती है। स्विमटायका इन देशों में वालेंटियर्स को भेज कर तैराकी व बचाव के तरीके सिखाती हैं। झरना स्विमटायका पेरू टीम के लिए तैराकी करेंगी। उन्होंने बताया कि यह रिले रेस चैरिटी के लिए फंड इकट्ठा करने तथा जागरूकता के लिए आयोजित की जा रही है। उन्हें 1500 पाउंड इकट्ठा करने का जिम्मा मिला है जिसमें से वे 90 प्रतिशत फंड प्राप्त कर चुकी हैं,। इस रिले रेस में ब्राजील, मोजाम्बिक, कैन्या, पेरू, इडोनेशिया की टीमें भाग लेंगीं। झरना ने बताया कि हमारी टीम में पांच स्विमर हैं। इंग्लिश चैनल पार करने के लिए स्विमर को बोट व हेलिकॉप्टर का खर्चा खुद उठाना पड़ता है। उनका चैनल पार करने व ट्रेनिंग का खर्च चेरिटी संस्थान ने उठाया है। इंग्लिश चैनल के लिए सुबह ढाई बजे स्विमिंग शुरू करते हैं व 33 किलोमीटर का फासला समुद्र में 12 से 18 घंटे तक में तय करना होता है।

झरना ने बताया कि उनके पति मधुसूदनन सुंदरराजन, पुत्री शांभवी तथा पुत्र अर्जुन उनके प्रेरणा स्त्रोत हैं। झरना पिछले दो वर्ष से इंग्लेण्ड में समंदर व तालाबों में ओपन वाटर स्विमिंग कर हर मौसम व तापमान में कड़ा अभ्यास कर रही हैं। उनकी रिले टीम में पांच सदस्यों के साथ एक बेकअप तैराक भी है जो पिछले साल किसी वजह से तैराकी स्पर्धा पूरी नहीं कर पाया था। 33 किलोमीटर की रिले में एक तैराक 90 मिनट एक बार में तैरेगा। यह तब तक चलता रहेगा जब तक कि पूरी रिले समाप्त नहीं हो जाती। उनका इवेंट 28 जुलाई से 3 अगस्त के बीच के शेड्यूल में होगा व इस दौरान मौसम के हिसाब से पायलट की हरी झंडी मिलने पर डोवर से रिले रेस शुरू होगी।

झरना ने बताया कि वे इंग्लेण्ड में नेशनल हेल्थ सर्विस के लिए कॉन्ट्रेक्ट ऑफिसर के पद पर कार्यरत हैं। उदयपुर से उनका गहरा जुड़ाव है व यहीं से उन्होंने तैराकी संघ के बैनर तले स्विमिंग सीखी।

अतीत की प्राप्ति के लिए इतिहास जरूरी : प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के संघटक इतिहास एवं संस्कृति विभाग द्वारा वरिष्ठ इतिहासविद् डॉ. के. एस. गुप्ता का अभिनंदन किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, मुख्य वक्ता प्रो. जी. एन. माथुर, सुखाड़िया विवि की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. मीना गौड़, शांता गुप्ता, सहायक कुल सचिव डॉ. धमेन्द्र राजौरा, विभागाध्यक्ष डॉ. हेमेन्द्र चौधरी ने प्रो. गुप्ता का माला, उपरणा, पगड़ी, स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र से सम्मान किया।

प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि जब भी इतिहास की बात होगी, प्रो. गुप्ता का नाम अवश्य लिया जाएगा। संकट के समय इतिहास की गुत्थी सुलझाने एवं तथ्यों के साथ समाधान करने में प्रो. गुप्ता का कोई जवाब नहीं है। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि अतीत की प्राप्ति के लिए इतिहास का होना जरूरी है। इतिहास हमारी संस्कृति, सभ्यता को जोड़ती है। इतिहास की रचना से पुन: रचना का काम सतत् होना चाहिए। प्रो. गुप्ता की 16 पुस्तकें, 60 से अधिक विभिन्न विषयों पर प्रकाशित शोध लेख, 75 से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भागीदारी एक कीर्तिमान है।

समारोह में प्रो. नीलम कौशिक, डॉ. आमोस मीणा, अनुराग सक्सेना, डॉ. देव कोठारी, डॉ. ललित पाण्ड्ेय, प्रो. जीवनसिंह खरकवाल, हरीश तलरेजा, मदनमोहन टांक, छगनलाल वोहरा, डॉ. उषा अग्रवाल, डॉ. भगवाती नागदा, डॉ. पंकज आमेटा, डॉ. अनिल शर्मा, जयशंकर चौबे, इन्द्रसिंह राणावत, डॉ. रेखा श्रीमाली उपस्थित थे। संचालन डॉ. ममता पूर्बिया ने किया।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (10)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

ख्यालों की किताबें तो कई जगह से प्रकाशित हुईं परन्तु अनेक ख्याल लेखक ऐसे हुए जिनके लिखे ख्याल हस्तलिखित गुटकों में मिलते हैं।

किसी समय उदयपुर इन ख्यालों का प्रसिद्ध गढ़ था। इस बात की स्पष्टोक्ति जसवंतसागर कृत 'उदयपुर वर्णन' में देखने को मिलती है। वि. सं. 1785 से 1790 के बीच जसवंतसागर ने 'उदयपुर छंद' की रचना की। इस छंद में उदयपुर नगर का सांगोपांग वर्णन मिलता है। स्थान-स्थान पर कवि ने ख्याल-तमाशों का भी उल्लेख किया है। यथा

ख्याल तमासो तिण को जोर।
द्विरद मचावै सौरा सोर॥ 36॥
दूहा दसरावें दीवाली पै तमासा गणगौर।
एसहु उदयापुर पछै ख्याल नहीं इन ठौर॥ 39॥
पूर्व उदयपुर को वर्णन कीदो अनुभव को रस पूरण पीधो।
छंद कहयो मैं एह तमासे जसवंतसागर कवि इस मासे ॥ 40॥

ख्यालों के अनुसन्धान के संदर्भ में लेखक को मुनि कांतिसागर जी से मेवाड़ी ख्यालों का एक गुटका प्राप्त हुआ जिसमें निम्नांकित आठ ख्याल संग्रहीत हैं -

(1) गोपीचंद का ख्याल (2) बणजारे का ख्याल (3) दोस्त का ख्याल (4) जरी पल्ला का ख्याल (5) रूठेड़ा भरतार का ख्याल (6) जवेरी का ख्याल (7) पंडित का ख्याल (8) मीठू का ख्याल।

गुटके में कहीं भी ख्याल-लेखक तथा लिपिकर्ता का नाम नहीं दिया गया है पर प्रत्येक ख्याल के प्रारंभ में लेखक ने अपने उस्ताद देवीलाल को अवश्य स्मरण किया एक उदाहरण इस प्रकार है -

मे तो साहेब के दरबार मीठू आया रे।
सुरसुत माय शारदा समरूं गजानंद ने धाऊं॥
देवीलाल ऊसताद हमारे जोनकु सीस नमाऊँ॥1॥
गली गली में जाडु फेरे॥ नत की पावे रोटी॥
पड़े तीन पाव चुन पेट में फड़के बोटी बोटी॥ 2॥
खाल बुवारू बाल बुवारू॥ बीच में रखु देरी।
चार पइसा लेता महीने नत की करता फेरी।।
मेठू मेरा नाम कहीजे।।
ऊदीयापुर में रेता।।
सबी सेरकु स्याफ करे हम, सबसे रोटी लेता।। 4॥

स्याही, कागज तथा लिखावट को देखकर यह गुटका सौ वर्ष से अधिक पुराना नहीं लगता। इससे स्पष्ट है कि आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व उदयपुर में ख्यालों की उन्नत एवं समृद्ध परम्परा थी। मुनि कांतिसागर से प्राप्त गुटके में से 'दोस्त का ख्याल' यहां प्रस्तुत है। इसमें मेवाड़ी भाषा की सांस्कृतिक जीवंत चेतना तथा बोलीचाली का सहज प्रवाह देखने को मिलता है।

ख्याल दोस्त का :

सरवर रंगरी बूटी छाणस्यां सुण दोस्त हमारा॥ टेर॥
बखत हुवारे भाई सैलका बागां में चालां॥ टेर॥
सुरसत माय सारदा सुमरूं गजानंद ने ध्याऊं ।
देवीलाल उस्ताज हमारा जिनकू सीस नमाऊं॥ 1॥
सरवर बूटी छाणस्यां रे मांय मलास्यां बूरो।
घोट छांण ने पीवस्यां जोरे थूं म्हारो दोस्त है पूरो॥ 2॥
सरवर बूटी छाणस्यां जो भाई चालो बाग के मांई।
तीज तमास्या देखस्यां जो रंग बातां करस्यां आंई॥ 3॥
करो सैल भाई बागकी ओरे आज तीज तेवार।
तरे-तरे की नारी आवे सज सोला सिणगार॥ 4।।
घटा उठी भाई जोरसूं ज भाई मांय चमंके बीज।
बूंटी पीवो छाण के जो भाई देखण चालो तीज।। 5।।
साल दुसाला ओढ़ लो न भाई तुर्रा धरलो चार।
कड़ा कलंगी पेरलो न भाई चल कर देखो नार॥ 6॥
में बरसे इंदर घुरे न भाई मच्यो सैर में कीच।
घूंघट में बिजली खवे र भाई अंभर बद्दल बीच॥ 7॥
केसर और कसूंबल ओढ़े फूल गुलाबी साड़ी।
पंकज फूली केतकी ज प्यारी यो वागो मेवाड़ी॥ 8॥
बागां चालो सैल कूंन भाई व्हो घोड़े असवार।
चंपा मरवा मोगरा न भाई देखो सुगणी नार।। 9।।
आज नवेली तीज है न सब बाग झूलवा जाती।
चाल चले गवरी का जैसे घूमे मगनो हाथी॥ 10॥

देखन आई हे मिरगा सुंदरी या तीज तमासो॥ टेर॥
देखन आई सुंदरी जो रे नैण मिरग की जाण।
काढ़ कलेजो ले गई जो वा किस्तर बचे पिराण।। 1।।
चालो करस्यां दोसती रे भाई वा चंचल है नार।
कमर चीता बण रई जो रे छतियां पकी अनार ॥ 2।।
नैणां काजल बह रहे रे भाई दाँत सोना री चूंप।
नथ में हीरा झलमले ने भाई सायब दीनो रूप॥ 3।।
केसर वरणा अंग है ज प्यारी रई चीर में छाय।
कंज ज सोवे हाथ में जो प्यारी मंद-मंद मुसकाय।। 4।।
के हंसा मोती चुगे न के लंगण कर जाय।
सरगां अलगां कूं चली जो वा पायल पांय बजाय॥ 5।।
नैनां बीच कसूंबी डोरा लाल हाथ में मेंदी।
सीस फलसी र गूंथरया जो रे लगी जड़ाऊं बेंदी॥ 6।।
सीस कसूमल ओढ़ नी र भाई धनक बाण के रंग।
चली सहेल्यां जूथ में जो भाई नणद भोजाई संग।। 7।।

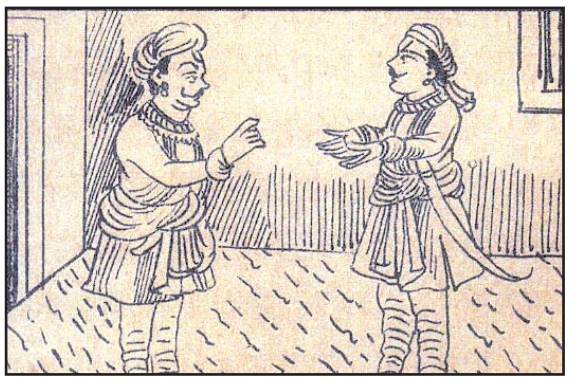

भाई नई करणा तुम प्रीत बिराणी नार सू।। टेर।।
प्रीत विराणी नार सूं रे भाई नई करणा तुम भूल।
पेली तो वा लागे मीठी पर पाछे जा धूल।। 1।।
मैं नई जावूं नार कोर भाई सुनो हमारी बात।
बागां देखो कामणीर वा सब सखियन के साथ।। 2।।
घुड़लो चढ़ने निसरजो रे भाई देखण तीज तेवार।
बरछी लागे नैण की जो भाई माइये कलेजो पार।। 3।।
तिरिया वे बिराणी नार है रे भाई नई करणा तुम जोर।
केना मेरा मानले रे भाई क्यूं करता है सोर॥ 4॥
प्रीत पराई नारसूं रे भाई भूल करो मत कोय।
करणा फेर डरणा नई जो होना सो होय॥ 5॥
सीख सरीरां ऊपजे रे भाई दीधा लागे डाम।
केवा सुणवा कछु नई जो तेरे दिल भावे तो मान।। 6।।
आप कई सो होयगी रे भई इसक बुरी है जात।
लिखिया लेख टले नई जो कई बै माता के हाथ॥ 7॥

मारग छोड़ोजी जांवां मेल में माराज कुंवरजी।
आज मनावां लोड़ी तीज हो म्हां पे करपा कीजिये।। टेर।
मारग छोड़ो कुंवरजी ने थे मती करो नी जोर।
नगर सेठ की बेटी वाजूं थे मत जाणो ओर॥ 1॥
आज मनावां तीज छे जो रे वार पामणुं कीजो।
चार पेर का चार लाख थे रोकड़ म्हासूं लीजो॥ 2॥
धन दौलत री कमी नई म्हारे नगर सेठ है बाप।
सोना चांदी माणक मोती जवारात अण माप॥ 3॥
अमरसींघ का बेटा मुझकूं जाणे सारा गाम।
मुझे बंधावे कौन है जो रे चंद कुंवर मेरा नाम॥ 4॥
राजकुंवर थांने ओलख्या न थे मारग दो माराज।
लोग सुणे छे सेर का जी कांई म्हारी जावे छै लाज॥ 5॥
मैं नई मानूं सुंदरी जो मेरा दिल नई घर के माय।
दोय घड़ी के कारणे जो तू क्या मेलन में जाय॥ 6॥
मारग छोड़ो कुंवरजी जो थे सुणो हमारी बात।
खेल तमासा देखसां जो म्हां नणद भोजायां साथ॥ 7॥
वचन हाथ पर देकर सुन्दर देखन जावो तीज।
चार लाख रोकड़ थै लीजो ओर लेवजो रीज।। 8।।

काल सहेल्यां मांयने जो म्हें झूलण ने जांवा।
वेग पधारो कुंवरजी जो म्हें गावां सोरठ आवां॥ टेर।।
करी छे तियारी मोती मेल की म्हांने सेज रमावो।
नेनां तीखा है नाजुकड़ी प्यारा लागणा॥ टेर।।
तीखा थारा नैन है जो प्यारी भया कलेजा पार।
धन जोबन सायब दियो थांने रूप दियो करतार॥ 1॥
म्हूं छूं पियारी आपकी जो थें म्हने रमावो सेज।
कामदेव आतुर चुवे जो थें मती लगावो जेज॥ 2॥
पाना फुलां पदमणी जांरे टपक टपक रस जाय।
नजरयां देख्यां आपने जो म्हारे घर नई बार सुहाय॥ 3॥
लूंमां कसियो ढोलियो जो म्हारे पांवा चंदण कीच।
चलकर पोढ़ो सेज में जो थांने राखू हिवड़ा बीच॥ 4॥
चालां पोढ़ो सेज में जो म्हां अंतर छिटकां भारी।
चोवा चंदण कुमकुमा जो थे करो सेज की त्यारी॥ 5॥
मरवा और दाड़मी फूली फूली खूब चमेली।
नणद सिधारी सासरे जो म्हूं छूं आज अकेली।। 6।।
फूल सेज बिछवाय दे न थारे मोती मेल के माय।।
आज मनावां लोड़ी तीज थें देर लगावो काय॥ 7॥
हाथ जोड़ अरजी करूं जो रे आप पधारो मेल।
रंगवाड़ी के मायने जो या तरे तरे की सेल॥ 8॥

रंग छायो रे रंगीला म्हारी सेज में नाजक चंदकुंवर के।। टेर।।
मोती मेल के मांयने जो म्हारे आज रंगीली रात।
आलस दूर हटाय ने जो म्हें उठ बेठी परभात॥ 1॥
रंग चूवे प्यारी सेज में जो यो टपक टपक रस जाय।
आज मेल के मांयने जो प्यारी पोढ़ी अंग लगाय॥ 2॥
साड़ी में सल पड़िया म्हारी बिगड़ी कोर किनारी।
पेल सावणी तीज पे जो म्हारे चंद कँवर से यारी॥ 3॥
लिपटी प्यारी अंग से जोरे मुख में राचे पान।
अमरत वाणी बोलती जो म्हारे लागे ब्रेका बान॥ 4॥
जामा सोवे जरकसी जोरे अलवलिया सिरदार।
धन भाग उस नार का ज्यारे थां सिरसा भरतार।। 5।।
प्यारी थारा अंग की जोरे का लग करूं बखान।
थारे म्हारे प्रीत लगी है ज्यूं सोपारी पान॥ 6॥
हाथ सिरोही तेग है जो प्यारी पीठ गेंडे की ढाल।
सिर पर है पचरंगी मोली ओढ़ण साल दुसाल॥ 7।।

गंधर्वों के ख्याल :

जिस प्रकार रावल चारणों के अलावा कहीं भी रामतों का प्रदर्शन नहीं करते, भवाई अपने यजमानों के अलावा कहीं मंच नहीं मांडते, उसी प्रकार गंधर्व लोग जैनियों के अलावा कहीं भी अपने ख्यालों का तख्ता नहीं जमाते और न किसी अन्य से कोई पारिश्रमिक, पुरस्कार तथा नेग आदि ही प्राप्त करते हैं। जहां-जहां जैनियों की बस्ती होती है, ये लोग अपना दल बनाकर निकल पड़ते हैं। मंदिरों में अपना पड़ाव डालते हैं और ओसरे के अनुसार जैनियों के यहीं इनके खाने पीने की व्यवस्था रहती है। ये लोग अत्यन्त सात्विक तथा अपने व्रत नियम के पक्के होते हैं। इनमें रात्रि भोजन निषेध रहता है।

ये लोग सभी धार्मिक ख्याल करते हैं। बड़े-बड़े तख्तों का मंच बनाया जाता है। उसके एक ओर से मंच खुला रहता है। ऊपर साधारण कपड़े का चंदोवा लगा दिया जाता है। प्रारम्भ में सभी पात्र स्तुति-वंदन के लिए मंच पर उपस्थित हो जाते हैं। वाद्यों में ढोलक, हारमोनियम तथा नगाड़े का प्रयोग रहता है। एक व्यक्ति, अपने पास ख्याल की पोथी रखता है जो प्रदर्शन के समय पात्र को उसके हिस्से के बोल देता रहता है। पात्र गायकी के रूप में मंच के तीनों ओर घूम फिर ठहरकर अपने बोल सुनाता है उसके बाद वाद्य उन बोलों की संगत करते हैं और अंत में फिर से सीधी सादी जबान में पात्र एक साथ उन बोलों की पुनरावृत्ति करता है। ये लोग नृत्य के लिए कभी अपने पाँव नहीं उठाते। नृत्य की बजाय बोलते वक्त ही हाथ-पांवों की विशेष हलचल प्रदर्शित करते हैं। ये लोग मुख्यतया 'श्रीपाल मैना सुन्दरी' का खेल करते हैं। अपने यजमानों की वृत्ति व्यवहार और भावना के अनुसार ही ये लोग अपने खेल-रंग को घटाते-बढ़ाते रहते हैं।

- क्रमश :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।